शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 4 | उदयपुर बुधवार 01 मार्च 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

होली पर कथा-कथन और थापांकन

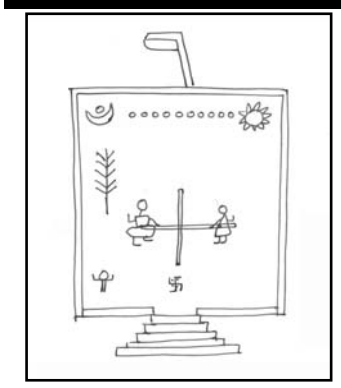

होली से लेकर गणगौर तक का समय विविध धर्मानुष्ठान का है। इन दिनों महिलाएं संयमित जीवन जीते हुए अपना पूरा समय धर्ममय कर्म में गुजारती हैं। व्रत करके कथा कहती हैं और पूरे अनुष्ठान से उनका समापन करती हैं। यह सब करने के पीछे उनका सौभाग्यवती बने रहकर पारिवारिक सुख-सम्पदा की वृद्धि तथा मंगल मांगल्य बना रहने की भावना ही प्रमुख रहती है। दशामाता की कहानियों पर कई वर्ष पूर्व मेरी आत्मजा डॉ. कविता मेहता ने पीएच.डी. प्राप्त की थी। उसकी पुस्तक 'राजस्थान की लोकव्रत संस्कृति' नाम से प्रकाशित हुई।

उदयपुर के राजमहल की मुख्य सडक पर जगदीश मंदिर के आगे बद्दू भगतण का दरवाजा प्रसिद्ध है। इससे प्रवेश करने पर भीतर पूरी बस्ती बसी हुई है। 14 अप्रेल 1976 को यहां निवास कर रही अम्बाबाई गुजरगौड़ (80) से उनके निवास पर भेंट की। यहीं नाव घाट पर रह रही गायिका नारायणीबाई ने उनसे भेंट कराई। अम्बाबाई बड़ी जानकार और आस्थावान महिला थीं। कहानियों का पूरा भंडार थीं। उनके मकान में विविध थापे भी दीवालों पर बने देखे। उनका पूजा विधान तथा कहानी कथन महिलाओं की जीवनधर्मिता का आवश्यक अंग था जिसके पीछे उनके सौभाग्यवती बने रहने तथा परिवार में खुशहाली और आनंद ठाठ रहने का प्रबल भाव था।

अम्बाबाई ने बताया कि भादवासुदी आठम, राधा अष्टमी को ऊंकार्या आठम के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन कवेलू पर मिट्टी की कूकड़ माकड़ बना पूजा करते हैं। कूकड़ माकड़ के रूप में कूकड़ के 5 अंडे तथा माकड़ के 108 अंडे बनाते हैं। महिलाएं आठ वर्ष तक इस दिन व्रत करती हैं और उसकी उझमणी यानी समाप्ति पर आठ जोड़े, पति-पत्नी को भोजन कराती हैं। प्रत्येक जोड़े को जीमाने के उपरान्त चांदी का कान में पहनने का आभूषण, ऊंकार्या तथा कापड़ा देती हैं। व्रताथी महिला के लिए इस दिन उसका भाई सोने का बना ऊंकार्या लाकर पहनाता है। यह आजीवन पहना रहता है बल्कि मृत्यु के बाद भी नहीं खोला जाता है। इस समय कूकड़ माकड़ की कहानी कही जाती है। अम्बाबाई ने यह कहानी सुनाई-

कूकड़ माकड़ दोनों बहिनें थीं। दोनों साथ रहतीं। एक दिन डूंगर पर दावाग्नि से कूकड़ अपने बच्चे को छोड़ उड़ गई। दावाग्नि में माकड़ भस्म हो गई। दोनों बहिनों ने अगला जन्म ब्राह्मण के घर लिया। ब्राह्मण ने एक को अपनी जाति में तथा दूसरी को राजा के घर विवाह दी। ब्राह्मण के वहां विवाहिता के पांच संतानें हुईं पर राजा के वहां वाली के कोई संतान जीवित नहीं रहती। इस पर उसने अपनी बहिन पर शक किया कि उसी ने कोई कामण-टोटका कराया होगा। उसने राजा से कहा कि वे अपनी बहिन के पांचों लड़कों की हत्या करा उनके मुंड मंगवायें अन्यथा गोखड़े से कूदकर वह अपने प्राण त्याग देगी।

राजा ने डावड़ी के साथ जहर के लड्डू भेजे पर बालकों पर कोई असर नहीं पड़ा। सांप गोइरे भेजे जिनसे बच्चे

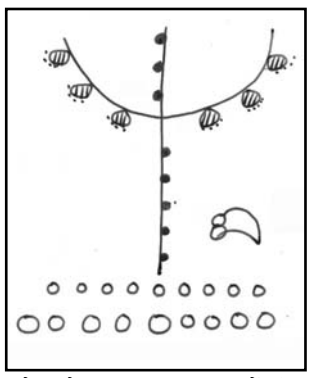

खेलने लगे। इस पर राजा उन्हें शिकार पर ले गया जहां उनके मुंड काट लाया। रानी ने उन्हें घर में टोकरे के नीचे छिपा दिये। उधर शिव-पार्वती जोगी तथा बिल्ली बन निकले। जोगी भीख मांगने लगा, कहा कि भीख दो नहीं तो श्राप दूंगा। रानी डरी। उधर बिल्ली रूप पार्वती टोकरे से बच्चों के मुंड निकाल लाई। उन पर अमृत का छींटा दिया जिससे वे जीवित हो उठे। रानी ने टोकरा ऊंचाया पर कुछ नहीं मिला।

उन्हीं दिनों रानी के लड़की हुई पर तत्काल मृत्यु को प्राप्त हुई। रानी ने सोचा कि बहिन मिलने आयेगी तो उस पर यह मौत थोप दूंगी। बहिन आई। उसकी गोद में लेते ही लड़की जीवित हो गई। बहिन बोली, पूर्वजन्म में अपन दोनों बहिनें थीं। कूकड़ माकड़ नाम था। डूंगर पर दावाग्नि लगी तो तू अपने बच्चों को छोड़ भागती बनी। इस पर तेरे दोष लगा जो अब भोग रही हो। मेरे आसमाता का इष्ट था सो मैं बाल-बाल बची रही। ए आसमाता ! तू ब्राह्मणी पर जैसी तुष्टमान हुई वैसी सब पर होना और रानी जैसी बेअक्ल किसी को मत देना।

अम्बाबाई ने डाडा वावजी के व्रत और कथा सम्बंधी जानकारी देते बताया कि होली के बाद आने वाले दीतवार को डाडा बावजी का व्रत किया जाता है। यह व्रत अलूणा यानी बिना नमक मिले

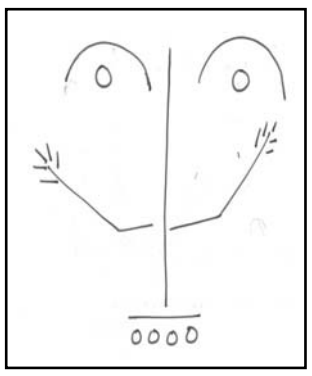

आटे के दो चंदक्ये यानी बड़ा रोट बनाकर पूरा जाता है। इनमें एक रोट सूरज बावजी के सांड यानी गाय के केड़े यानी बछड़े को खिलाया जाता है और दूसरा खुद के लिए बनाया जाता है। इस रोट के बीच का हिस्सा बारी यानी छोटी खिड़की, छिद्र के रूप में खुला रखकर सूरज के दर्शन किये जाते हैं। यह रोट पानी अथवा दही से भी खाया जाता है।

डाडा से तात्पर्य दिन से है। दिन के बावजी अर्थात् देवता सूर्य हैं। दीतवार से तात्पर्य रविवार अर्थात् सूर्यवार से है। इस दिन लूम्ये की कहानी कही जाती है। यों दशामाता के दस ही दिन कही जाने वाली कहानियों के अंत में लूम्या की कहानी कही जाती है।

अम्बाबाई ने बताया कि कार्तिक माह में प्रतिदिन जो कहानियां कही जाती हैं तब भी लूम्या की कहानी कही जाती है। करवा चौथ को भी इसकी कहानी कही जाती है। मिगसर माह में भी यह कहानी कहते हैं। इस पूरे माह में दही-भात खाया जाता है। इससे महिलाओं को श्रीकृष्ण जैसा वर यानी पति पाने का पुण्य मिलता है। कहावत भी है- 'दही-भात खावणो ने श्रीकृष्ण वर पावणो' अर्थात् दही-भात खाना और श्रीकृष्ण जैसा वर पाना।

पूरे माह जमीन पर सोया जाता है। यह महीना गोप महीना कहलाता है। पहले गोपियां जमुनाजी में नंगी नहाती थी। लूम्या श्रीकृष्ण का साथी रहा। इस कहानी का हुंकारा नहीं दिया जाता है। लूम्या की कहानी इस प्रकार है-

श्रीकृष्ण भगवान जमुनाजी के घाट गोपियों के साथ नहाने चले। लूम्या भी साथ चलने की जिद्द कर बैठा। कृष्ण ने कहा, तू मेरे साथ गड़बड़ करेगा।

लूम्या ने कहा, कुछ नहीं करूंगा। वो साथ हो लिया। गोपियां जमुनाजी में नहा रही थी। लूम्या उनके कपड़े लेकर भाग गया। गोपियां निकले तो पहनें क्या? कृष्ण से बोली, हमारे कपड़े कहां गये? आपके साथ कौन था? कृष्ण बोले, लूम्या था। उन्होंने लूम्या को जा पकड़ा। पूछा- गोपियों के कपड़े क्यों ले आया? लूम्या बोला- वे जल में नंगी क्यों नहाती हैं? उन्हें मालूम नहीं, जल में तैंतीस करोड़ देवताओं का निवास रहता है।

कृष्ण बोले, जो हो गया सो हो गया। अब कपड़े लाकर दो। लूम्या बोला- गोपियां जो धर्म करे, उसमें से आधा हिस्सा मुझे दें। मेरे नाम की कहानी कहें। वाटकी भर लड्डू का दान करें। घर की डेरी, देहरी में खड़ी रह जो भी दान करें उसका फल मुझे मिले। कृष्ण ने जो कुछ लूम्ये से कहा, सारी बातें स्वीकार कीं तब लूम्ये ने गोपियों के कपड़े जहां पड़े थे वहां कदम्ब की डाल पर जाकर रखे।

अम्बाबाई के वहां घर की दीवाल पर दशामाता, दीयाड़ीमाता तथा चौथमाता के थापे बने देखे। अम्बाबाई ने बताया कि होली के ठीक दूसरे दिन से दस दिन तक दशामाता के व्रत शुरू हो जाते हैं। दस ही दिन कहानियां सुनकर औरतें व्रत पूरती हैं। एक समय भोजन करती हैं। दशामाता का थापा वृक्ष की छाया में बैठ गुलाल को पानी में घोलकर जो गाढ़ा घोल बनता है, उससे दीवाल पर बनाया जाता है। चौखुणे थापे में नीचे से भीतर जाने का मार्ग है। भीतर ऊपर ही ऊपर दोनों कोनों में चांद-सूरज बने हैं। बीच में पीपल का वृक्ष, पास में चौपड़ खेलते महादेव तथा पार्वती। नीचे सात्या बना हुआ है। सात्ये के पास एक ब्राह्मण का पुतला बना है जो महादेव-पार्वती के जीतने-हारने की साख भरता है। दीयाड़ी का थापा कुंकुम से बना हुआ है। नवमी को पूजने के कारण त्रिशूल बनाकर उसके नीचे नौ बिंदियां लगाई जाती हैं। त्रिशूल के पास गुग्गे का अंकन बना है। अम्बाबाई ने बताया कि यह थापा गुजरगौड़ों में ही बनाया जाता है। बड़ेरों के अनुसार बुढापे में ब्याहे गये दम्पत्ति के लड़का हुआ। कुछ समय बाद ही दोनों चल बसे तब गुग्गे ने उस शिशु को पालपोष कर जीवित रखा। गुग्गे का अर्थ चील से भी है सो कहीं-कहीं चील भी मांडी जाती है। कहीं उल्लू मांडा जाता है।

वहीं पर चौथमाता का थापा भी पत्थर की दीवाल में बना देखा। अम्बाबाई ने बताया कि कहीं-कहीं चौथमाता के चंवर ढोलते एक ओर काला भैरु तथा दूसरी ओर गोरा भैरु दिखाये जाते हैं। कई घरों में चौथमाता काच में स्थायी रूप से जड़ी मिलती है।

-म. भा.

नवीन प्रकाशन

जब तक आप स्वयं इस पुस्तक को नहीं पढ़ेंगे तब तक 'कहानी का करिश्मा' और मोलेला की मिट्टी का मतलब आपकी समझ में नहीं आयेगा।

पुस्तक की पाठकीयता को कहानी ने गुदगुदाया है। एक स्मित, एक मुस्कराहट चेहरे पर लाइये और मोलेला की मिट्टी को माथे पर लगाइये। शायद आपके ललाट के लेख सुगंधित हो जायें।

-बालकवि बैरागी

मोलेला और वहां की माटी की बनी मूरतों के साथ भी कहानी की रसज्ञता के पीछे यही भाव-ताव है। मेरी प्रसन्नता तो यह है कि मैंने मोलेला की मूर्तियों के शून्य से लेकर शिखर होते काल को देखा है। मूर्तियां बनाने वालों की चौथी-पांचवीं पीढ़ी को भी देख पा रहा हूं।

मुझे अपनी पीढ़ियों से अधिक उनकी पीढ़ियां याद हैं और उन लोगों की सूची भी कम बड़ी नहीं है जिन्होंने मोलेला जाकर बड़ी गहराई से अध्ययन किया और वहां की मूर्तियों को अपने साथ विदेशी धरती पर ले जाकर प्रतिष्ठामूलक संतोष पाया। यह पुस्तक कहानी के साथ मेरी तरंग यात्रा और उसकी अन्तरंग यात्रा का दरसाव है।

-डॉ. महेन्द्र भानावत

पुस्तक आर्यावर्त संस्कृति संस्थान, नई दिल्ली से प्रकाशित 250 मूल्य की है।

स्मृतियों के शिखर (27) : डॉ. महेन्द्र भानावत

पड़ चित्रकारी के पर्याय श्रीलाल जोशी

पड़कला मर्मज्ञ श्रीलाल जोशी राजस्थान की पड़ चित्रकारी के बहुविज्ञ ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने एक ओर पड़ चित्रांकन के अपने पारंपरिक घराने को बहुमान दिया तो दूसरी ओर इस शैली में नये प्रयोग कर देश-विदेश का ध्यान आकृष्ट कर इसे ख्यात-कीर्त किया।

आजादी के बाद एक स्थिति यह भी बनी कि स्वयं श्रीलालजी ने ही पड़ चित्रकारी को तिलांजलि देकर विज्ञापन पट्ट और सिनेमा स्लाइडें बनाना शुरू कर दिया था पर जब-जब भी उनसे मिलना होता, हम यही कहते रहे कि पड़ शैली का प्रभाव कोई दिन दुनिया महसूस करेगी अत: इस ओर अपनी दृष्टि पैनी बनाये रखें।

फिर हैण्डीक्राफ्ट बोर्ड की अध्यक्षा कमलादेवी चट्टोपाध्याय से उनकी भेंट कराई और इस अति महत्वपूर्ण चित्रविधा की लोकानुरंजनकारी आस्थामूलक लोकमान्यता से अवगत कराया। यह बात 1963 के अगस्त महीने की है जब मैं पहली बार श्रीलालजी से उनके भीलवाड़ा स्थित जोशी कलाकुंज में लोककला मनीषी देवीलाल सामर के साथ मिला।

कमलादेवी को बताया गया कि यह पड़ मात्र चित्रकारी का ही पट नहीं है। इन चित्रों से जुड़ी लंबी प्रेरक गाथाएं हैं। ये गाथाएं लोकदेवता पाबूजी और देवनारायणजी के जीवन चरित्र को प्रतिबिंबित करती हैं। इन्हें गाने वाले भोपे होते हैं जो ग्राम्यजीवन के साथ पूरी रात, कई रातों तक विशिष्ट गायकी तथा अभिनयिकी के साथ कथा-वाचा करते हैं। गांववाले अनिष्ट निवारण के लिए पड़ बंचवाते हैं। यह पड़ लोकदेवताओं का लीला चित्र है जिसके साथ ग्रामीणजनों की अटूट आस्था, श्रद्धा और विश्वास बंधा हुआ है।

कहना नहीं होगा कि कमलादेवीजी ने बड़े गहरे मन से इसकी उपयोगिता और लोकव्यापी मनीषा को ह्रदयंगम किया और एक साथ कई पड़ें बनाने का ऑर्डर ही दे दिया। यही एक शुरूआत थी इस मरजीवी हो रही कला की जिसे श्रीलालजी अब भी नहीं भूले हैं।

समय-समय पर उनसे भेंट हुई तो यही प्रसंग लंबे समय तक हमारी बातचीत का आधार बना रहा। उसके बाद तो श्रीलालजी इस चित्रावण में ऐसे लगे जैसे कोई योगी अपनी साधना में सबकुछ भूल तन्मय हो जाता है। उनके इस कलाधर्मी समर्पण ने पड़ कला को आंचलिकता से उठा अंतर्राष्ट्रीय फलक दिया और विद्वान अध्येताओं का ध्यान आकृष्ट किया। फलस्वरूप उनकी पड़ें देश-विदेश के महत्वपूर्ण संग्रहालयों, कला संस्थानों तथा ख्यातनाम इमारतों, होटलों तथा बड़े घरों की शोभा बनी हुई हैं।

श्रीलालजी से मेरा कई जगह, कई बार मिलना हुआ लेकिन 24 अक्टूबर 1991 को अपने निवास उदयपुर में उनकी भेंट यादगार बनीं जब उनसे पड़ कला को लेकर विस्तार से बातचीत हुई। उस बातचीत के मुख्य अंश यहां प्रस्तुत हैं-

आप मूलत: कहां के रहने वाले हैं ?

भीलवाड़ा के पास पुर गांव हमारा मूल गांव है जो तब पुरमांडल कहलाता था। जब शाहजहां ने शाहपुरा बसाया तब मेवाड़ के कलाकार मांगे गए। महाराणा ने तब हमारे परिवार को शाहपुरा भेजा।

शाहपुरा कौन गए ?

पांचाजी गए। शाहपुरा दरबार ने मेरे पूर्वजों को बड़ी इज्जत दी। अपने ठिकाने में दीवालों पर कई जगह चित्रकारी कराई। अन्य ठिकानों में भी इसके लिए उन्हें भेजा गया। बनेड़ा ठिकाने में भी उन्होंने बहुत काम किया। आज भी उन ठिकानों में यह कला देखने को मिलती है। इस कला को सीखने के लिए बाहर भी भेजा गया।

बाहर किसको, कहां भेजा ?

एक को जोधपुर भेजा। दूसरे को उदयपुर भेजा। तीसरे को अजमेर भेजा। अजमेर में एक चीनी कलाकार था, बड़ा माना हुआ, उसके पास भेजा। वह आंख पर पट्टी बांधकर सिखाता था।

आपके खानदान में कौन नामी कलाकार हुए ?

टेकचंदजी, मुकंदजी नाम के दो बड़े नामी कलाकार हुए। मेरे पिता रामचंद्रजी ने भी बड़ा नाम कमाया पर वे अक्खड़ स्वभाव के बड़े स्वाभिमानी थे।

उनकी कोई यादगार घटना !

यही कि जब मेरे दादा चौथमलजी चल बसे तो पिताजी को उत्तराधिकारी की पगड़ी बंधाई गई। पगड़ी दस्तूर के बाद उन्हें दरबार में मुजरे के लिए ले जाया गया तो दरबार ने कहा, रमोजग्यो यही है क्या ?

ऐसा क्यों कहा ?

इसलिए कि वहां की चाकरी नहीं करने पर उन्हें दरबार ने भदर कर दिया था यानी देश निकाला दे दिया था। शाहपुरा की सीमा में उनका प्रवेश वर्जित था पर चोरी-छिपे माह में एक बार घर अवश्य जाते। रात को देरी से पहुंचते और सुबह जल्दी निकल जाते। संतरी पहरेदार उनकी बड़ी इज्जत करते थे सो आने-जाने देते थे।

भदर होने पर कहां रहे ?

भीलवाड़ा रहे पर शाहपुरा दरबार की पूरी मेहरबानी बनी रही। चार रूपया हर माह फिर भी मिलते रहे। रहने को मकानात भी दिये। एक बार तो पिताजी ने दरबार को कह भी दिया कि शाहपुरा की भी मुझे आधी रोटी खाने को मिल रही है।

पड़ चित्रांकन में आपका योगदान क्या रहा ?

यही कि रंग संयोजन और चित्र मंडन का आधार पारंपरिक रखा पर फोक आर्ट और फाइन आर्ट को मिला दिया। अन्य पौराणिक एवं ऐतिहासिक गाथाओं के आधार पर चित्र संयोजन किया। बारहमासा, रागमाला के सेट भी तैयार किए। सिल्क पर पड़ांकन किया तो वह भी चल निकला। महाराणा प्रताप, हल्दीघाटी, रानी पद्मिनी, गढ़ चित्तौड़, मीरांबाई, ढोलामारू पर भी पड़ फलक तैयार किए। लोगों ने इन्हें भी खूब पसंद किया। भित्तिचित्रों में भी कई प्रयोग किए।

ये प्रयोग किस तरह के रहे ? कहां किए ?

वर्षों पूर्व सबसे पहले तो देवीलालजी सामर और आपने ही भारतीय लोककला मंडल के संग्रहालय में ही पूरी देवनारायण की पड़ बनवाई। वहां देखकर देश-विदेश के कई लोग मेरे पास आते रहे। दिल्ली के क्राफ्ट म्युजियम, बड़ौदा की फाईन आर्ट्स फेकल्टी, अहमदाबाद के गूजरी संग्रहालय तथा अमरीकन एम्बेसी दिल्ली में मेरा काम काफी पसंद किया गया।

इन सबके अलावा सबसे बड़ा चित्रांकन जयपुर के जवाहर केंद्र में किया जब विजय वर्मा साहब वहां महानिदेशक थे। वहां नौ ग्रहों पर आधारित पूरा जम्बूद्वीप बनाया। जैन तांत्रिक चित्र भी बनाये। शेखावाटी चित्र शैली के भी चित्र बनाये।

क्या विदेश में भी यह कार्य किया ?

मास्को, स्वीडन, जापान, पाकिस्तान, नेपाल भी गया और वहां भी यह कार्य किया। अपने देश से अधिक वहां के लोग कला की कद्र करने वाले लगे। जापान में तो एक खाका ही मेरा चालीस हजार में गया।

पड़ कला से जुड़े स्थायी महत्व के कौनसे कार्य आपको लेकर किए गए ?

सबसे पहले तो आप ही ने किया जो अब भी कर रहे हैं। फिर ललित कला अकादमी, जामिया मिलिया कॉलेज और क्राफ्ट म्युजियम वालों ने मेरे पर डोक्युमेंट्री बनाई। दिल्ली में दूरदर्शन वालों ने भी बनाई। और भी लोगों ने बनाई। फिलाडेल्फिया के जो मिलर ने पड़ कला पर बड़ा अच्छा अध्ययन किया। डोक्युमेंट्री भी बनाई। केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के जोन स्मिथ ने भी पड़ कला पर एक अच्छी पुस्तक लिखी। कुल मिलाकर अपनी कला और कार्य से मुझे बेहद संतुष्टि है।

कलामंडल में मैं जो मिलर तथा जोन स्मिथ दोनों से मिला। मिला ही नहीं अपितु उन्हें पड़ कला पर अध्ययन के लिए संबंधित चित्रकारों, कलाकारों तथा वाचक भोपों से भी मिलाया। शाहपुरा में दुर्गेश जोशी से भेंट की। यहीं बस स्टेंड के पास देवनारायण के मंदिर में दीवाल पर दुर्गेश के दादा जड़ावजी द्वारा चित्रांकित देवनारायण की पड़ देखी जिस पर उसकी निर्माण तिथि के संबंध में यह इबारत लिखी हुई थी- राजाधिराज श्रीश्री 108 श्री उम्मेदसिंहजी का राज में गांव शाहपुरा में पड़ मांडियो जोशी जड़ावचंद श्रीवल्द घीसूलालजी के हाथ की। धाबाई कल्याणजी देवरा की मंडाई का रूपया 81 कलदार दिया। मिति वैशाख सुदि 8 संवत् 1909।

शाहपुरा से 11 जुलाई 1972 को हम भीलवाड़ा आए। यहां श्रीलालजी से भेंटकर पड़ों के संबंध में विस्तार से जानकारी ली। कुछ प्रश्नों के उन्होंने जो उत्तर दिये वे इस प्रकार हैं-

प्रारंभ में पड़ किस प्रकार बनाई जाती थी ?

पहले तो पड़ें हाथ के बुने रेजे पर ही बनाई जाती थी। यह मजबूत तथा मोटा कपड़ा होता था जो वर्षों तक फटता नहीं था। इसे कड़क बनाने के लिए इस पर मेदे अथवा आटे का करप लगा दिया जाता, फिर इसे सूखा दिया जाता। सूखने के बाद कपड़े की खूब घिसाई की जाती ताकि वह चिकना बन जाय।

इसके लिए कपड़े को अच्छे साफ तथा चिकने पत्थर पर फैला दिया जाता फिर उस पर बेलननुमा गट्ठे को घुमाया जाता। लकड़ी के बने इस वजनदार गट्ठे में चिकना पत्थर लगा हुआ होता जिसके वजन से कपड़े के सारे सल निकल जाते और कपड़ा एकदम सजीला हो जाता।

इस कपड़े को पड़ बनाने के काम में लिया जाता। सर्वप्रथम जिसकी पड़ बनानी होती उस देवता के नाम की धूप लगाई जाती और कुंवारी लड़की से पहला रेखांकन कराया जाता। तत्पश्चात कपड़े पर पेंसिल की सहायता से चित्रों की रेखाएं उभारी जाती। देवनारायण की पड़ में प्रथम रेखांकन के लिए नेग के रूप में भोपे से ग्यारह रूपये लिए जाते।

पेंसिल के रेखांकन के बाद रंगों की भराई का क्या तरीका रहता ?

पेंसिल के रेखांकन के पश्चात पीले रंग से पड़ का कच्चा कसरा किया जाता। कसरा होने के बाद रंग भरने की रस्म प्रारंभ की जाती। रंगों में सबसे पहले केसरिया रंग भरा जाता। इस रंग से मुख्यत: चित्रों के अंग पूरे किए जाते। यानी बॉडी कलर भरा जाता। इस रंग के बाद पीला रंग भरा जाता। इस रंग को पारा कहते। इस रंग से आभूषण भरे जाते। तदनन्तर हरा रंग लिया जाता।

पेड़, पौधे, पोशाकें तथा जानवरों के लिए यह रंग काम में लिया जाता। इसके बाद नील भरी जाती। यह काला भेरू तथा भूत जैसे पात्रों के लिए काम में आती। पानी का दरसाव भी नीले रंग से होता। सबसे अंत में हिंगलू यानी लाल रंग भरा जाता। नील एक विशेष प्रकार के पौधे की पत्तियों से तैयार की जाती। सर्वप्रथम उस पौधे की पत्तियों को खूब सड़ाया जाता। उनके सड़ जाने पर उन्हें पत्थर पर खूब पीसी-घोटी जाती।

रंग भर जाने के बाद चित्रों में स्याही का प्रयोग आउटलाइन्स के लिए तथा सांप आदि के लिए किया जाता। पात्रों की आंखें सबसे बाद में कोरी जाती। ऐसा विश्वास है कि आंख बन जाने के पश्चात चित्र पूर्णरूपेण देवरूप धारण कर लेता तब उस पर काम नहीं किया जा सकता।

पड़ पूरी बन जाने के बाद उसे सूखा दी जाती और तब फिर चित्रों को चिकना बनाने के लिए उसकी घिसाई की जाती। ये सारे रंग पत्थरों से स्वयं चित्रकारों द्वारा बनाये जाते। इसके लिए बहुत समय तथा श्रम की आवश्यकता होती। गोंद के साथ इन पत्थर रंगों को पीसा जाता और खूब घुटाई की जाती। इस घुटाई में पूरा सप्ताह तक लग जाता।

सर्वाधिक रूप में कौनसी पड़ प्रचलन में है ?

पाबूजी की पड़ें ही अधिक बनवाई जाती हैं। देवनारायण की पड़ बहुत कम बनाई जाती है। इसके भोपे भी कम ही होते हैं। लोग बंचवाते भी अधिक नहीं हैं। इसकी कहानी बहुत लंबी है। पूरी पड़ बंचवाने में दो-दो, तीन-तीन रात तक लग जाती है। यह पड़ सबसे अधिक लंबी होती है अत: महंगी भी बनती है और मेहनत बहुत मांगती है तो इसका मेहनताना भी अधिक प्राप्त करते हैं।

मूल पारिश्रमिक के अतिरिक्त इस पड़ के लिए भोपे को 22 रूपया अतिरिक्त देने होते हैं। ग्यारह तो प्रथम रेखांकन पर जो कुंवारी कन्या द्वारा दिलाया जाता है तथा ग्यारह रूपये जब पड़ पर नाम कोरा जाता है। पाबूजी की पड़ के लिए केवल सवा रूपया ही देना पड़ता है। जो भी भोपा नई पड़ बनवाकर ले जाता है उसकी उसे अपने गांव में जाकर रसोई देनी होती है तथा रात्रि जागरण करना पड़ता है।

भीलवाड़ा में ही हम वयोवृद्ध कल्याणजी से भी मिले। उन्होंने बताया कि पड़ों में सर्वाधिक लोकप्रिय पाबूजी की पड़ रही है। देवनारायण की पड़ सबसे बड़ी तेरह से लेकर पच्चीस हाथ तक की लम्बाई लिए होती है। सर्वाधिक चित्रांकन तथा लंबी गाथा इसी पड़ की होती है। इसे मुख्यत: गूजर बांचते हैं। इसके साथ जंतर नामक वाद्य बजाया जाता है।

पाबूजी की पड़ रावणहत्था नामक वाद्य के सहारे नायक भोपा तथा उसकी पत्नी भोपी द्वारा बांची जाती है। राइका जाति में इसकी सर्वाधिक मान्यता है। भोपी अपने हाथ में दीवट लिए गाथा-बोल दुहराती, टेक देती हुई भोपे के पीछे नृत्य निरत रहती है। अन्य पड़ों में रामदला, कृष्णदला पड़ के छोटे रूप में बांची जाती है। इनके साथ कोई वाद्य नहीं रहता। भैंसासुर की पड़ बाबरी जाति के लोग रखते हैं। इसका वाचन नहीं होता।

छुटपुट लेखन के अलावा पहलीबार सन् 1968 में मेरे द्वारा लिखित रामदला की पड़ तथा 2000 में पाबूजी की पड़ नाम से पुस्तकें प्रकाशित हुई जो पड़ संबंधी उम्दा जानकारी लिए है।

श्रीलालजी के कहे अनुसार भीलवाड़ा से हम 23 किलोमीटर दूर स्थित सीदड़ीयास गांव गये। वहां पहुंचने के लिए रास्ता बड़ा उबड़खाबड़ था सो हमने रिक्शा ले लिया पर तब भी कई जगह हमें पैदल यात्रा ही करनी पड़ी। बीच राह एक छापर में पाबूजी का भोपा परिवार मिला जिससे जो मिलर के लिए रावणहत्था तथा रामदेवजी का पड़क्या खरीदा।

सादड़ीयास में पता चला कि देवनारायण के भोपे की विधवा पत्नी भारी परेशानी और गरीबी में दिन काट रही है। उसके पास एक पड़ थी जिसे मिलर खरीदना चाहता था और इस बहाने उसे सहयोग भी करना चाहता था परन्तु किसी भी कीमत पर भोपिन ने पड़ देने से इंकार कर दिया।

पूछने पर उसने बताया कि पराये हाथों में देवता के चले जाने पर उनकी वैसी सार सम्हाल नहीं हो सकती। देवता यदि क्रुद्ध हो गया तो मेरा अनर्थ हो जायेगा। मेरे साथ जो बीत रही है, वह क्या कम है। पड़ के सहारे ही मैं जी रही हूं। इसके नहीं रहने पर मेरा वर्तमान और मृत्यु-बाद का जीवन भी व्यर्थ हो जायेगा। उसके इस कथन पर मिलर क्या कहता! देवता के प्रति ऐसी आस्था, श्रद्धा और समर्पण से वह अपने नयनों में अश्रुपूर्ण उदासी लिए गमगीन ही रहा।

- **शेष पृष्ठ सात पर**

होली के हड़कम्प

आप स्वयं ही जानिये, किन पर हैं ये छंद।
सूंघ सको तो सूंघ लो, किसमें किसकी गंध।।

वो भी दिन क्या खूब थे, जब मंडराते बाज।
अब चीड़ा नहीं फटकता, सुस्त पड़ा है साज।।
गीतड़े ! काहे गीत रचो ?
टूटीफूटी कड़ियां जोड़ो, जंगल जाय नचो।
कोई कहता तुम अतीत हो, वर्तमान की राग
घर बाहर निकलो नहीं, कैसो जाग्यो विराग
काहे को करो नशो ?
रंग व्यंग्य खूंटी टंगै, घर की चक्की चाट।
तेल बिना घाणी हुई, रखवाली को खाट।।
उदियाचल से लुढ़कते, अस्ताचल की ओर।
भान नहीं, बेभान हैं, कब रजनी, कब भोर।।
पांव यहां टिकते नहीं, मधु में नहीं मिठास।
पता नहीं कैसे कहां, क्या करते कुछ खास।।
एक विषय पर नाटक कविता कथा सभी बंचवालो।
रात-रात भर चाहो तो घट्टी टंचवालो।।
पता नहीं इस उम्र में, कैसे बदले रंग।
बेढंगे भी ढंग में, लगते मेरे संग।।
नवल नहीं, नौ लख नहीं, फिर कह बने किशोर।
भीतर से इतने गहन, कोर मिल न छोर।।
नानावत के दोहरे, पीछोला के तीर।
होली की भस्मी भरे, चंदन करे गंभीर।।
बीमा और साहित्य का, कैसा अद्भुत मेल।
कहीं नहीं ऐसा मिले, सुरसत-लिछमी खेल।।
एक रात में बन गई, कविता-भूति कमाल।
चलो चले उस देश को, होली करे धमाल।।
पहले गायन को दियो, फिर भैंसन सम्मान।
सेठां के मन आ गयो, कवि राजा हैरान।।
भूल सुदामा को गये, लछमीजी में ध्यान।
गुन्ताड़े में लग रहे, मित्र नहीं पहचान।।
झुकी कमर बेढब बनी, टेढ़ी मेढ़ी चाल।
घालमेल में लग रहे, घर में करे धमाल।।
उद्बोधन ही रह गया, बाकी मारो गोली।
रीता जावे काव्य रस, होली मसलो रोली।।
हिरणी मगरी में रहे, मगरी हिरणी माय।
इस विमर्श संवाद में, कविता गई समाय।।
रहे हारते किन्तु जीतते, होनहार जो होते।
जिनको जगना है वे जगते, बाकी तो सब सोते।।
मेरी ही है फिल्म, सनिमा भी है मेरा।
नहीं जान पाओगे पप्पू, यह रहस्य का घेरा।।
संगत का है असर, न कोई टसर मसर
छंद बद्ध कविता करता है, चन्दर भी।
सतयुग की धारा, कलयुग में अमृत बन
सबके बहती है बाहर भी और अन्दर भी।।
कोई न बन पाया बलि, समय बड़ा बलवान।
बिना फूल फल शीष पर, चढ़ता पत्ता पान।।
हर-हर गंगे की तरह, हर मन होत न प्रीत।
रघुकुल में ही निभ सकी, रघुकुल वाली रीत।।
अपने को क्या जानना, जान पराया मोल।
घूम फिर कर आ गये, यह पृथ्वी है गोल।।
सब रंग सबके साथ भी, किन्तु अगल पहचान।
जैसे बादल बिजुरी, इन्द्र धनक की शान।।
सबकी जय होती नहीं, फिर भी करते धन्य।
आप आप ही हैं प्रभो, दिखा न कोई अन्य।।
पिचकारी चलती नहीं, रंग व्यंग्य की धार।
नहीं डोलची दे रही, गोफण जैसी मार।।
जो संचित है ज्ञान, उसी को उलथा पुलथा।
करते नवल सुज्ञान, उसी को पुथला थुथला।।
हाई-वे पर दौड़ते, खिसक गई चट्टान।
हाथ न आई कांकरी, फिसल बचाई जान।।
अलख निरंजन, आगे गाड़ी अंजन।
भरी दुपहरी, करलो मंजन।।

इनमें पहचानें-

भगवती व्यास, कमर मेवाड़ी, किशन दाधीच, महेन्द्र भानावत, रजनी कुलश्रेष्ठ, देवेन्द्र इन्द्रेश, तुक्तक भानावत, ज्योतिपुंज, विलास जानवे, इकबाल सागर, श्रीकृष्ण जुगनू, नवल किशोर, प्रभा वाजपेयी, राजेन्द्रमोहन भटनागर, देव कोठारी, लक्ष्मीनारायण नंदवाना, शैलेष व्यास, कैलाश मानव, विकल्प मेहता, सरिता जैन पुरुषोत्तम छंगाणी, हरमन चौहान, राजकुमार जैन 'राजन' लक्ष्मी रुपल।

-'सम्प्रति' के सौजन्य से

खोज-खबर

आदिवासी चित्रांकन

आदिवासी बड़वा जिसे कहीं पोथीभाट तो कहीं वंशावली वाचक भाटजी भी कहते हैं। उनके अनुसार आदिवासियों में चित्रांकन की अनोखी परम्पराएं मिलती हैं। विवाह पर दीवालों पर ही नहीं, आंगन में और अपने हाथों तथा शरीर पर भी चित्रांकन बनाकर खूब सजते-सजाते हैं। इनमें मोर, हिरण, घोड़ा, तोता, चीता जैसे पशु पक्षी होते हैं। ऐसी मान्यता है कि ये पशु-पक्षी देवताओं की सवारी हैं। इन पर देवी-देवता सवार होकर भ्रमण करते हैं और अपने भक्तों को शुभ-मंगल आशीष देते हैं। उनके कारज साधते हैं। मनोकामना पूरी करते हैं। अनिष्ट होने से बचाते हैं और आनंद-मंगल की वर्षा करते हैं।

चित्रकार को भी इन चित्रों को बनाने के लिए साधक बनना पड़ता है। इसके लिए जिस दिन चित्र बनाने होते हैं उसके पूर्व रात्रि को उसे सपन में देवी-देवता आते हैं। समझाइश देते हैं। उसे किन-किन विधि-विधानों का ख्याल रखना होता है, इसकी समझाइश देते हैं। शुद्ध तन और मन की पवित्रता बनाये रखने के लिए वह आंगन पर सोता है और देवता के प्रति समर्पण भावों में रम जाता है।

अन्य चित्रकारों की तरह चित्र बनाते समय वह उनका रेखांकन नहीं करता। चित्र कोई भी, कैसा भी बनाना हो, त्रिभुजाकार, वृत्ताकार, दो कैंची, चौराहा कैंची, वक्र, सीधा और आड़ा, टेढ़ा; बिना रेखांकन के अपने सधे हुए हाथों से उनका उकेरण प्रारंभ कर देता है। वह रेखाओं के संतुलन तथा संयोजन में इतना दक्ष होता है कि कोई रेखा मोटी है, पतली है या एकल, दोकल है, इसकी परवाह नहीं करता। उसके दिल-दिमाग में देवता की धारणा, प्रभावना पैठी हुई होकर वह तदनुसार ही रंगों का चित्ताकर्षक वैचित्र्य शोभित करता है।

चित्रांकन के लिए वह स्वयं नीम, बांस अथवा बबूल की पतली टहनी तैयार करता है। जैसा ब्रश चाहिए मोटा, बारीक या कि मकोला वह टहनी के सिरे को कूटकर या फिर उसके रुई अथवा कपड़े की लीरी, चिंदी लपेटकर तैयार कर लेता है। ऐसे ही वह प्राकृतिक रूप में उपलब्ध रामजी रंग तैयार करता है। इन रंगों में लाल पत्थर पीसकर, हल्दी को बारीक कर, सफेद खड़िया को गलाकर, चावल को भिगोकर, नील में पानी मिलाकर, काजल-कोयले को मिश्रित कर उन्हें समतल पत्थर पर समतल लोड़ी से घोटकर एकमेक करता है और फिर उनमें गोंद-पानी का मिश्रण करता है ताकि चित्रों में चमक आ जाये और वे अधिक समय तक अपना प्रभाव दिये रहें।

विवाह पर गणेशजी के प्रतीक रूप में गोदराज अथवा महाराज का अंकन अनिवार्य समझा जाता है। यह मंदिर का रूपाकार लिए होता है। चतुर्भजाकार में समचौरस वर-वधू का रेखांकन पूरे घर को मांगलिक करता समृद्धि देता है। इसके साथ सातिये का अंकन सर्व दिशा सुख-समृद्धि का सूचक होता है। आदिवासी जीवन के लिए शिकार का दृश्य भी आवश्यक समझा जाता है। दुधारु पशु के दूध को दही के रूप में जमाकर छाछ फेरने की घर-घर में प्रथा मिलती है। छाछ फेराई में जैसे दही-पानी मथावट से लूणी निसृत होती है उसी प्रकार बांस निर्मित मथनी अर्थात् रवाई द्वारा मथाट वर-वधू को एक सूत्र में आलिंगनबद्ध कर वंशवृद्धि का फलितार्थ भी है इसीलिए गोदराज के पास मायरत अर्थात् दूधली माता का अंकन किया जाता है जो पुत्र जन्म की संकेतित सार्थकता है। यह कामना भी है कि इससे प्रसूता के स्तन दूध रे भरते रहेंगे ताकि जन्म धारण करने वाला शिशु सदैव तृप्त रहे।

इन चित्रों से संबंधित लोकगीतों का प्रचलन या फिर इनमें पाये जाने वाले कंठासीन गीतों के अनुसार चित्रों का प्रणयन देखते ही बनता है। एक गीत की पंक्तियां देखिये-

रेवला भाई रइने केवुं बुलेंसे काला गामिती रे,
रेवला भाई रईने केवुं सबे भाइयो केलारे काला भाई
रेवला भाई रइने केवुं दूलिड़ो बुलावो रे गामिती रे काला भाई
रेवला भाई रईने केवुं धामतु जोड़ मोकलावो रे गामिती रे काला भाई
रेवला भाई रईने केवुं कई दुली बुघेर रे काला गामिती रे काला भाई
रेवला भाई रईने केवुं ऊंसे टेबे घेरे रे गामिती रे काला भाई
रेवला भाई रईने केवुं आंगणो मकन लीमड़ी रे गामिती रे काला भाई
रेवला भाई रईने केवुं घूघरी भालो जायो रे गामिती रे काला भाई
रेवला भाई रईने केवुं हांकड़िया ली वाड़ रे गामिती रे काला भाई

मिट्टी से बने कोठे-कोठी और सोहरी प्रत्येक घर में देखने को मिल जायेगी। सेहरी तथा कोठे-कोठी कई घरों में सौ-सौ वर्षों पुराने देखे गये। इनमें मुख्यतया धानचून यानी खाद्यान्न सुरक्षित किया जाता है। सेहरी संदूक के रूप में घर के कपड़ेलत्ते तथा अन्य सामान रखने के काम आती है। कोठियां दो से तीन फीट ऊंची होती है जिनमें दूध, दही, घी या फिर रसोड़े संबंधी सामान रखा जाता है।

कोठे-पांच-पाचं, सात-सात फीट की ऊंचाई लिए होते हैं। ये ऊपर से खुले होते हैं जिनके माध्यम से धान भरा जाता है और नीचे एक ओर बीच में गोल खुला स्थान होता है जिससे आवश्यकतानुसार धान बाहर निकाला जाता है। यह स्थान मकई निकालने के बाद जो डूंडा-डंठल बच जाता है, उनकी सहायता से मिट्टी मिश्रण से मूंद दिया जाता है। **-म.भा.**

भीलों में निकलंक सम्प्रदाय

डूंगरपुर-बांसवाड़ा क्षेत्र वागड़ में भीली आदिवासियों की सर्वाधिक बस्ती है। इनमें जो भक्ति सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं वे गुरु गोविन्द का विशेष प्रभाव लिए हैं। यह सम्प्रदाय विष्णु के भावी दसवें अवतार की मान्यता लिए है जिसे निकलंकी अवतार से जाना जाता है। निकलंकी से तात्पर्य निष्कलंकी से है। इस सम्प्रदाय की दस प्रमुख शिक्षा तथा मान्यताएं हैं जो मनुष्य के लिए मान्य है-

1. प्रत्येक प्राणी में आत्मा का निवास है। उसमें ईश्वर का अंश है।
2. नर-नारी दोनों का जुड़ाव जरूरी है। दोनों मिलकर ही संसार को गतिवान बनाते हैं।
3. मानव जीवन मूलत: प्रकृतिजन्य परिवेश लिए है। नशा खोरी, चोरी चपाटी, जीव हिंसा, मांसाहार उसका स्वभाव नहीं है। उसके लिए ये सब वर्जित हैं।
4. मानव के लिए प्रतिदिन स्वच्छ रहने के लिए स्नान-ध्यान आवश्यक है।
5. सृष्टि में सर्वत्र परमात्मा का निवास है। अत: चलते-फिरते, उठते-बैठते हर समय उसका ध्यान होना चाहिए।
6. गुरु का स्थान परमात्मा से भी ऊपर है कारण कि गुरु ही परमात्मा के दर्शन कराने की सामर्थ्य रखता है।
7. सूरज चांद पृथ्वी असल में परमात्मा के ही प्रतीक रूप हैं अत: इनकी नियमित आराधना करनी चाहिए।
8. सदा सत्य बोलना तथा सच का व्यवहार करना चाहिये। भूलकर भी झूठ नहीं बोलना चाहिये।
9. पराई नारी को बुरी निगाह से नहीं देखना चाहिये। किसी कन्या को बेचना तथा उसका दापा-दहेज लेना भयंकर अपराध है।
10. गाय हमारी माता है। माता की तरह ही हमें उसका सम्मान करना चाहिये और उसके प्रति पूजा का भाव रखना चाहिए।

-म. भा.

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 01 मार्च 2017

सम्पादकीय

गधा : माता शीतला की सवारी

फाल्गुन-चैत्र का महीना मस्ती का रंग चढ़ा महीना कहा गया है। पहले होली और फिर शीतला, दशामाता, गणगौर का त्यौहार आता है। चारों देवियां हैं। इनसे जुड़े पूजा-प्रतिष्ठा, मनौती-प्रसंग, व्रतानुष्ठान, कहानी-किस्से तथा अंकन; लोकजीवन में परम्परा का लोक जो आलोक देता है वह हमारे जीवन-मंगल के श्रेष्ठत्व का प्रतीक है। ये देवियां छाया रूप में तो कहीं स्वप्न रूप में, कहीं मानवीय वेश-भेष में तो कहीं अनुभूति-एहसास-इंगित रूप में जीवन धन्य करती हैं।

चैत्र कृष्णा सप्तमी को चेचक की देवी के रूप में माता शीतला का त्यौहार मनाया जाता है। मुख्यत: बच्चों में आई चेचक नामक बीमारी से यह देवी निजात दिलाती है। जिन घरों में चेचक का प्रकोप रहता है उन घरों की माताएं ही अपने बालकों की पीड़ा का सर्वाधिक भोग्या होती हैं। इसका एक नाम सेढ़ल भी है। मारवाड़ के नोखा कस्बे का इस देवी का मढ़ प्रसिद्ध है। शेखावाटी के बाघोर की शीतला और मेवाड़ के ऊंठाला गांव की शीतला माता बड़ा नाम लिए हैं। इस दिन बासी भोजन खाया जाता है। माता को भोग भी बासीड़ा का लगता है। चेचक पशुओं में भी होती है। सौराष्ट्र में काका बलिया के नाम से यह पूजित है। चेचक रूप में पांच कण एक साथ निकलने पर उन्हें झूमक्या बावजी तथा बड़े-बड़े फोड़ों के रूप में निकलने पर पतास्या बावजी के रूप में मानता की जाती है। शरीर के किसी भाग पर चेचक का प्रकोप रहता है। कई बार अंग-भंग की स्थिति आ जाती है और बालक काल के गाल में समा जाता है।

ऐसी भयंकर प्रभावना के चलते कई तरह की मान्यताएं प्रचलित हैं। महत्वपूर्ण यह भी है कि इस देवी का वाहन गधा है। राजस्थान में दीवालों पर पूजा के वक्त अंकन रूप में जो थापा-चित्र बनाया जाता है उसमें देवी शीतला जिस रथ में बिराजमान है उसे गधा चला रहा है। कहानी भी है कि देवी जब होली की ज्वाला में बुरी तरह झुलस गई तो कुम्हार-परिवार ने ही मिट्टी का पानी छिड़क उसकी रक्षा की। देवी ने प्रसन्न हो श्राप दिया कि तीन दिन बाद पूरे गांव में आग लगेगी, केवल तुम्हारा घर बचेगा तब गांव वाले बासी भोजन करें तो ही आग शांत होगी। तब से यह परम्परा चली आ रही है।

रत्नीबाई को मिली नारकीय जीवन से मुक्ति

उदयपुर। कहते हैं कि महिला का दो बार जन्म होता है। पहला बेटी के रूप में तो दूसरा जब वह मां बनती है। महिला जब मां बनती है तो बच्चे को देख सारे दुख दर्द भूल जाती है लेकिन मां बनने के दौरान अगर जरा सी लापरवाही हो जाए तो वह उसके लिए जीवनभर की परेशानी खड़ी कर देती है।

पाली जिले के देसूरी के आना गांव निवासी 58 वर्षीय रत्नीबाई पिछले 30 सालों से लगातार बच्चा होने के रास्ते से पेशाब आने की शिकायत के चलते परेशान थी। यह समस्या उसे बच्चे के जन्म के बाद से ही शुरू हो गई थी। प्रसव की जटिलता से उसके पेशाब की थैली एवं बच्चे के रास्ते के बीच कई छेद हो गए थे जिसके परिणाम स्वरूप उसके सामान्य रास्ते से पेशाब न आकर लगातार बच्चे के रास्ते से पेशाब बहता था।

पेशाब की बदबू और सदैव उसके गीले होने से स्वयं रत्नीबाई ही नहीं बल्कि उसके परिजन भी परेशान थे। गरीब होने के कारण परिजन इलाज कराने में असमर्थ थे लेकिन समस्या ज्यादा होने के कारण 13 साल पहले जमीन बेचकर इलाज के लिए गुजरात ले गए जहां रत्नीबाई का दो बार ऑपरेशन किया पर कोई फायदा नहीं हुआ। इन दोनों ऑपरेशन में लगभग तीन लाख रूपए खर्च हो गए।

गत दिनों परिजन उसे पेसिफिक मेडीकल कॉलेज एवं हॉस्पीटल लेकर आए जहां उन्होंने यूरोलॉजिस्ट एवं रिकन्स्ट्रक्शनल सर्जन डॉ. हनुवन्त सिंह राठौड़ को दिखाया। डॉ. राठौड़ ने तीन घंटे में इस सफल ऑपरेशन को अंजाम दिया। उनके साथ डॉ. प्रकाश औदित्य, डॉ. समीर गोयल, डॉ. पायल, अजय चौधरी एवं चन्द्रमोहन शर्मा की टीम थी। इस तरह के ऑपरेशन में लगभग एक से डेढ़ लाख तक का खर्चा आता है लेकिन पीएमसीएच के चैयरमैन राहुल अग्रवाल द्वारा निशुल्क ऑपरेशन कराया गया।

तेरह दिन का 'पूरवज'

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

मृत्यु प्राप्त व्यक्ति 'पूरवज' बनते हैं। प्राय: प्रत्येक जाति में इन पूरवजों से संबंधित पूजा-अनुष्ठान, मान-मनौती तथा आस्था-संस्कार जुड़े हुए हैं। कई गीत, गाथाएं, किवदंतियां इन पूरवजों के दिलचस्प घटना-प्रसंगों से जुड़ी हुई हैं। यहां पढ़िये आंखों देखी-भोगी तीन घटनाओं का साक्ष्य-

(एक)

पांच ब्हेन कुंवायें जीमाकर मुझे अपने घर में रात जगानी थी। पत्नी ने दो वर्ष से गुड़ नहीं खाने की 'आखड़ी' ले रखी थी। कई वर्षों से जो बावजी (पूरवज) माताजी को आते थे वे भी नहीं आ रहे थे। हम लोग इस सोच में पड़ गये कि जो बावजी बिना बुलाए ही, थोड़ी भी कोई दुख की घटना घटती, आकर दो टेपी बात कह जाते और हमें सुख का आधार दे निश्चिंत कर जाते; वे अब कई बार धूपध्यान देने पर भी क्यों नहीं आ पा रहे हैं?

फलत: 28 जनवरी 1976 को रातिजगा रखा गया। रात को 12-1 बजे तक औरतें बीच-बीच में गाना रोक-रोक कर बावजी को उलाहना भी देती रहीं और आपस में भी बातें करती रहीं कि पुराना 'घोड़ला' बूढ़ा हो गया है तो किसी नये घोड़ले को ही क्यों नहीं पकड़ लेते? यदि कोई गलती भी घरवालों से हो गई हो तो आकर तो कहना चाहिये। पत्नी उबासियों पर उबासियां ले रही थीं।

उसे कुछ भी पता नहीं था कि वह कहां बैठी है। मैं चुपचाप पूरवज बावजी को धूप देता रहा। सोच रहा था कि बावजी आ जाते तो रातिजगा सार्थक रहता। अंत में कमलास गीत गाया गया और यह कार्य समाप्त किया गया। दूसरी औरतें अपने-अपने घर चली गईं। समधी औरतें अपने हाथों में (पांवों में नहीं, क्योंकि रातिजगे में पांवों में नहीं लगाते) मेंहदी लगाकर सो गईं।

सुबह हुई। औरतें वापस गीत गाने बैठ गईं। मैंने धूप देनी प्रारंभ कर दी। इतने में अचानक बाहर बैठी पत्नी भीतर आई और बावजी के सामने पड़े आखे लेकर अपने पीछे फैंक दिये। एक समधी महिला ने उसे पकड़ लिया। पत्नी बोली- कुछ नहीं। सबने इस संकेत को समझ लिया कि पूरवज बावाजी ने नया घोड़ला पकड़ लिया है। पहलीबार डील में नहीं आते हैं इसलिए कोई खास बात नहीं है। चलो रातिजगे का मनाना तो सार्थक हुआ।

(दो)

इसी प्रकार का एक रातिजगा जयपुर में मेरे बड़े भाई साहब डॉ. नरेन्द्र भानावत के वहां दिया गया तब हम सब लोग, मेरा पूरा परिवार तथा दोनों बहिनें वहां एकत्र हुए। पूरवज-मूरत में 'वडारा' डलवाया गया। दूध गौ-मूत्र से उस मूरत को नहलाई गई। फिर पाट बिठाई गई। खूब गीत गाये गये। घी, खोपरे और अगरबत्ती की कड़ी धूप दी गई परन्तु फिर भी बावजी नहीं पधार रहे थे। हम सबको इस पर बड़ी चिंता हुई। कहीं ऐसा न हो कि बावजी ही न आयें तो रातिजगा ही निष्फल हो जाय। सुबह कई समधियों को भोजन के लिए भी निमंत्रित कर दिया गया था।

सब बातें हो ही रही थीं कि इतने में मेरा ध्यान मूरत की तरफ गया। मैंने उसे ध्यान से देखा तो पाया कि उस पर सुनार ने देवी की मूर्ति बना दी है। हमारे पूरवज तो हमारे सबसे बड़े भाई थे। मैंने यह बात वहां सबसे कही पर किसी ने उस पर विशेष गौर नहीं किया। उस रात बावजी नहीं आये। हम सब इसी चिंता में सो गये।

सुबह हुई। फिर रातिजगे के गीत उगेरे गये। फिर बार-बार गौ-मूत्र आसपास बाहर भीतर छांटा गया। धूपध्यान किया गया। इतने में माताजी को जोर से बावजी आये। वृद्धावस्था के कारण उनमें इतनी शक्ति नहीं थी फिर भी वे बहुत कुछ उछलीं, जमीं पर जोर-जोर से हाथ पटके। तीन-चार औरतें उन्हें कट्ठी संभाले रहीं पर उनका जोर नहीं चला।

उस वक्त बावजी ने बड़ा घुस्सा किया और मूरत को अपने हाथ से वहां से उठाकर एक पत्थर से कुचर-पुचर कर दी। भाईसाहब पर भी बावजी नाराज हुए। औरतें कह रही थीं कि ये तो बावजी भले थे जो और कुछ नहीं किया नहीं तो रातिजगा ही नहीं मानते तो सारे कियेकराये पर पानी फिर जाता। वहीं पता पड़ा कि ये बावजी इतने रूठ जाते हैं कि सारा भोजन ही गोबर के रूप में परिणत कर देते हैं। पूरे परिवार को बीमारी में डाल देते हैं और जो कुछ उनसे हो सकता है वह सब अनिष्ट कर देते हैं। सुनार से जब वडारा डलवाया गया तो उसे एक तरफ पवन (पुरूष) व दूसरी तरफ सर्प की मूरत बनाने को कहा था परन्तु उसने भूल से एक तरफ सर्प तथा दूसरी तरफ पवन के बजाय देवी बनादी। बहुत से देवता प्राय: एक ही खोल में रहते हैं। वे या तो पवन होते हैं या फिर देवी होते हैं पर कुछ पूरवज ऐसे होते हैं जो दो खोली में होते हैं। एक पवन की तथा दूसरी सर्प की। वे दोनों रूप धारण करते हैं। कभी पवन बन जाते हैं तो कभी सर्प। सपने में भी वे दिखाई देते हैं। रातिजगे में गीत प्रारंभ करने से लेकर जब तक कमलास गीत नहीं गाया जाता है तब तक बावजी एकलवराणे, एक पांव पर खड़े रहते हैं।

(तीन)

पिछले दिनों जब अपने गांव कानोड़ गया तो वहां पूरवज विषयक ही एक अजीब घटना सुनने में आई। उसके अनुसार एक परिवार में तेरह दिन का होकर एक बच्चा मर गया। जब वह बहुत बीमार हो गया तो उसे उदयपुर के अस्पताल में लाया गया। यहां उसका काफी इलाज कराया गया मगर वह बच नहीं सका। मरे हुए बच्चे को उसके माता-पिता कानोड़ ले जाना चाहते थे पर सभी लोगों ने यही कहा कि इतना छोटा बच्चा ही तो है अत: इसे वहां न ले जाया जाकर यहीं दफना दिया जाय। सबके कहने से यही किया गया।

कुछ दिनों बाद वही बच्चा 'पूरवज' बना। बच्चे के परिवार में नानाप्रकार के संकट पर संकट आते गये पर किसी को यह भान नहीं हुआ कि कहीं न कहीं पूरवज का तो यह खेल नहीं है। देव-देवरे छाण पड़ाई तो पता चला कि जो बच्चा मर गया है वही पूरवज बना है। उसे छाबणे बिठाओ तो ही यह संकट मिट सकता है। तेरह दिन का भी कोई पूरवज हो सकता है, इस पर किसी को विश्वास नहीं हुआ पर किया भी क्या जा सकता था।

किसी प्रकार रात जगाकर उसे छाबणे बिठाया गया। पहले तो वह नहीं के बराबर डील (शरीर) में आता और यदि आता तो बोलता कुछ नहीं, केवल अंग मोड़ने के संकेत देकर चला जाता पर 4-5 वर्ष व्यतीत होने पर वह आया। उसने कहा कि अब मैं बड़ा हो गया हूं। पहले छोटा था सो बोलता नहीं था। उसने यह भी कहा कि मुझे उदयपुर में ही क्यों छोड़ दिया गया। यहां कानोड़ लाना चाहिये था। लोग कहते हैं कि अब जब कभी भी वह आता है बड़ी मीठी-मीठी, प्यारी-प्यारी पर ठोस ज्ञान की बातें करता है। पूरवजों के ऐसे एक नहीं, किसिम-किसिम के सैंकड़ों किस्से मिलते हैं। सोचता हूं, यह भी एक विचित्र और महत्वपूर्ण अध्ययन का विषय है जिससे कई आश्चर्यकारी ज्ञान-विज्ञान संगत तथ्य हाथ लग सकते हैं।

कक्षा में पहलीबार पुतली

गांव का राजकीय प्राथमिक विद्यालय। उत्तराखंड के जनपद-पिथौरागढ़ का मेतली गांव। गांव के बच्चे। जिन्होंने 'कठपुतली' जैसा कोई शब्द सुना तो है मगर देखने, समझने का सौभाग्य नहीं मिल पाया था। सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र के क्षेत्रीय केन्द्र, उदयपुर से प्रशिक्षण प्राप्त कर मैं वहां से थमाये गये झोले के साथ विद्यालय में प्रवेश करता हूं। सभी बच्चों से हालचाल पूछते-पूछते बच्चे प्रार्थना की घंटी की टनटनाहट के साथ प्रार्थना हेतु पंक्तिबद्ध हो जाते हैं। प्रार्थनासभा की गतिविधियां पूर्ण होने पर बच्चे अपनी-अपनी कक्षाओं में प्रवेश कर जाते हैं परन्तु सर बैग में क्या लाए हैं ? यह प्रश्न सभी को पेरशान किये हुए है। जैसे-तैसे मध्यान्ह अवकाश का समय हो जाता है। मैं सभी बच्चों को एक साथ बिठा लेता हूं और सर्वप्रथम अपने प्रशिक्षण की सफलता की खुशी में उक्त बैग में सबसे ऊपर रखे मिष्ठान्न को सभी बच्चों तक पहुंचाने का प्रयास करता हूं। इसी के साथ बातचीत का दौर आरंभ होता है। मेरा प्रशिक्षण चूंकि 'शिक्षा में पुतली कला की भूमिका' पर था इसलिए बच्चों से भी सीधा यही प्रश्न पूछ बैठता हूं। क्या आप लोगों ने 'पुतली' शब्द सुना है? कुछ बच्चे हां सर कहते हैं। क्या कठपुतली देखी है? बच्चे-नहीं सर। चलो मैं तुम्हें पुतलियां दिखाता हूं। मेरा यह कहना और बच्चों का उत्साहित होकर एक-दूसरे के ऊपर झूक जाना। बच्चों को व्यवस्थित करता हूं। फिर प्रशिक्षण के दौरान उदयपुर में बनाई गई अंगुली पुतली, बैग पुतली, मॉउथ पुतली, छाया पुतली तथा दस्ताना पुतलियों से परिचित करवाता हूं। पुतलियों को देखते-देखते कविता नामक बालिका कह पड़ती है- सर, यह क्या करती है? मैंने सफलतापूर्वक उत्तर दिया- यह बोलती भी है, बातचीत भी करती है और नाचती-गाती भी है। ऐसे करते-करते कक्षा के सभी छात्रों में पुतली कला के प्रति कल्पनातीत उत्साह, बाल सुभल जिज्ञासाओं तथा कुतूहल का दौर चल पड़ता है।

पोथीखाना

मसखरी मसखरों की

'मसखरी' होली पर लिखे मसिजीवियों से संबंधित पुछल्लों का काव्य-संग्रह है। सन् 1985 से लेकर

2010 तक प्रतिवर्ष 25 वर्ष तक लगातार लिखना डॉ. महेन्द्र भानावत की नैरन्तर्य रसना-रसिकता का ही कमाल है। पुस्तक के प्रारंभ में 'कविता और मसखरी की कविता' शीर्षक वक्तव्य में डॉ. भानावत ने लिखा-''होली के इन धारदार पुछल्लों में हंसी-दिल्लगी है तो रंग-व्यंग्य भी। मौज-मस्ती है तो चुहलबाजी भी। छेड़खानी है तो चूंगट्या भी। मंगल भावना है तो दिलखुश बहार भी। मैत्री का इजहार है तो धमक मूसल भी। उपलब्धियों का बखान है तो करारी चोट भी। मित्रों की यादें हैं तो उनके बिछोह का गम भी। कई पुछल्ले द्वि-अर्थी हैं तो कइयों में जो संकेत-बीज हैं वे किसी महत्वपूर्ण घटना के साक्ष्य बनते हैं।''

होली पर काव्य-रंगों की बौछारें यदा-कदा साहित्यिकों में खूब रही हैं। जयपुर में भी मेघराज 'मुकुल', सावित्री परमार, रामरतन 'नीरव', रमेश 'सजल', भगवत शरण, चन्द्रकुमार 'सुकुमार' के समय ऐसी चुहलबाजियां, रंगरेलियां, मादक मस्ती, हंसी ठिठोली रहीं। कवि किशन दाधीच ने सन् 1972 की होली पर लिखी कविता कुरेद कर सुनाई जिसका उल्लेख बड़ी दिलदारी से भानावतजी ने किया-

उजला दर्पण देख मुकुल की,
मुसकानें बीमार हो गईं।
सत्यवान जब से बिछुड़े हैं,
सावित्री परमार हो गई।।
नीरव नयन किशन के जबसे,
सृजन हुए सौरभ को छूकर।
कुछ दिन भगवत शरण हो गये,
कुछ रातें सुकुमार हो गईं।।

कविवर नंद चतुर्वेदी हर रंग में, हर समय पुरोधा बनकर ही रहे। ऐसे में मसखरी उनके बिना खरी नहीं बन पाती। 'लोकचित्त की आराधना' में उन्होंने लिखा- ''मसखरी के पुछल्ले किसी गहरी काव्य-सर्जना के दबाव के अन्तर्गत नहीं लिखे गये हैं। कहीं तो वे छेड़खानी हैं। कहीं मसखरी, कहीं व्यंग्य, कहीं निंदा और कहीं पीड़न। इनमें किसी प्रकार की कविताई भी नहीं है। कुल मिलाकर एक लोक-भाव और उसी रंगत का लोक-साहित्यानुरंजन। जिन पर भी पुछल्ला लिखा है वे हमारे नगर के चिर-परिचित नागरिक या मित्र मंडली के साहित्यकार हैं। इनमें काव्य-कौशल या कि सामाजिक शील के सारे दावे खारिज हो गये हैं। इन्हें छेड़खानी के लिए लिखा है। अगर वह हो रही है तो हम खुश हैं।''

कुल मिलाकर 192 पृष्ठों की 199 रुपये कीमत वाली इस पुस्तक का प्रकाशन, सम्प्रति संस्थान, उदयपुर द्वारा किया गया। पुस्तक का आगे-पीछे का कवर-चित्र ही साहित्यकारों के कार्टूनी अंदाज का कमाल है।

-डॉ. तुक्तक भानावत

पोथीखाना

खुटौना के नीलकमल

खुटौना बिहार के मधुबनी जिले का एक गांव है। इसी गांव के नीलकमल डॉ. महेन्द्रनारायण राम की साहित्य-साधना एवं व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं से विभूषित इस ग्रंथ का सम्पादन

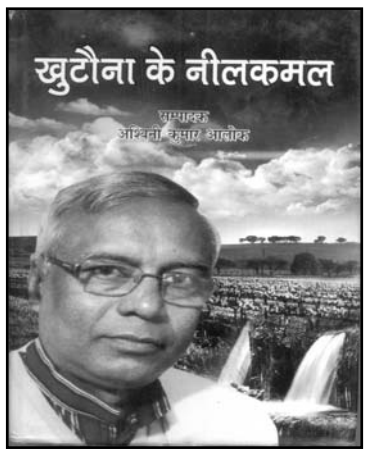

अश्विनीकुमार आलोक ने किया है जो स्वयं स्वतंत्र लेखन एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान लिए हैं। नीलकमल डॉ. महेन्द्रनारायण राम का उपनाम है। मैथिली साहित्य और लोकसाहित्य के क्षेत्र में डॉ. महेन्द्र एक सुपरिचित नाम है जो पिछले चार दशकों से साहित्य-साधक तथा शिक्षा-मनीषी बने हुए हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ के कृतित्व-क्रांति खंड में 38 आलेखों में विद्वान लेखकों ने डॉ. महेन्द्र के कृतित्व के बहुआयामी पक्षों पर विस्तार से लिखा है। इसमें डॉ. महेन्द्र को मैथिली लोकगाथा मर्मज्ञ, लोकधर्मी साहित्यकार, लोकसंस्कृति के उन्नायक, प्रेरक, रचनाकार, मैथिली जीवन पद्धति के विश्लेषक, सामाजिक मूल्यों के अन्वेषक, संस्कृति के संक्रमित होने के चिन्तक तथा गहबर गीतकार के रूप में विश्लेषित किया है।

व्यक्तित्व-व्याकरण नामक खंड में 25 आलेखों में डॉ. महेन्द्र व्यावहारिकता के अनुकरणीय व्यक्तित्व, डायट के प्रेरक स्तंभ, कलानिष्ठा के यशस्वी-पुरुष, निरभिमान व्यक्तित्व, दायित्व बोध के प्रेरक जैसे विशेषणों के धारक के रूप में स्थापित होकर लोकप्रिय बने हुए हैं। सभी लेख ग्रंथ नायक की गरिमा तथा पुरुषार्थ के मनस्वी पक्ष को रेखांकित करते हैं।

ग्रंथ की भूमिका लोकसंस्कृतिविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत ने लिखी है। लोकअध्येता का समग्र मूल्यांकन शीर्षक में उन्होंने लिखा- ''डॉ. महेन्द्रनारायण राम के व्यक्तित्व के कई पक्ष हैं। वे लोक अध्येता हैं तो लोकगायक भी। दीवारों के सुलेखक-चित्रकार और सज्जाकर हैं तो नाटककार, अभिनेता और निर्देशक भी, शिक्षा शास्त्री और प्रशासक भी। ग्रंथ में इन सभी पक्षों की आदरपूर्वक किंतु निष्पक्ष व्याख्या हुई है।'' कुल 300 पृष्ठों का यह ग्रंथ 600 रूपये का मूल्य लिए शब्द प्रकाशन, गणेशनगर, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित है।

- डॉ. कहानी भानावत

मुंह बोलते घटना-प्रसंग

डॉ. दिलीप धींग लिखित पुस्तक 'बोलती घटनाएं' विविध संस्मरणों, घटनाओं तथा प्रेरक-प्रसंगों का मूल्यवान संग्रह है। जैन संस्कारी परिवार में जन्मे तथा पालित पोषित होने के कारण डॉ. धींग के जीवन में ही नहीं अपितु कर्म क्षेत्र में भी जैनत्व का पूरा प्रभाव है।

इसी कारण सभी घटनाओं पर जैन दर्शन का ओटा-अटावन आलोड़ित है। पुस्तक के दो भागों में क्रमशः 85 तथा 28 घटनाओं का गुंफन कोई न कोई जीवनमूल्य, कोई न कोई सीख, कोई न कोई प्रेरणा देने वाला है।

लेखक ने अपने प्रारंभिक वक्तव्य में लिखा है-''जीवन में अच्छी-बुरी, खट्टी-मीठी अनेक घटनाएं घटती हैं। हर घटना के अनेक आयाम खड़े होते हैं। कुछ घटनाएं बोल उठती हैं, जीवंत बन जाती हैं। वैसी ही कुछ जीवंत घटनाएं कविता बन जाती हैं तो कुछ कहानी। कुछ घटनाएं उपन्यास बन जाती हैं तो

कुछ इतिहास। अनेक घटनाएं समय के प्रवाह में विलीन हो जाती हैं, फिर भी अपना कहीं न कहीं प्रभाव तो छोड़ ही जाती हैं।

ऐसी विभिन्न प्रकार की घटनाओं को इस पुस्तक में समाविष्ट किया गया है। इन घटनाओं में कुछ निजी जीवन के संस्मरण हैं तो कुछ दूसरों के प्रसंग।

पुस्तक के पहले भाग में संस्मरण लिये गये हैं और दूसरे भाग में अन्य प्रसंग सम्मिलित किये गये हैं। अनेक घटनाएं संतों से भी जुड़ी हैं। कुछ घटनाएं वैयक्तिक लग सकती हैं, लेकिन उनका संदेश अवैयक्तिक ही है।''

पुस्तक का प्रकाशन रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनोलोजी, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहु कारपेट, चैन्नई-600079 से हुआ है। कुल 226 पृष्ठ की इस पुस्तक का मूल्य मात्र 100 रूपये है।

-डॉ. कविता मेहता

सेवानिवृत्ति

नित्य की भांति आज अतिथिगृह के बाहर हर घण्टे पर घंटा नहीं बजा। सुबह चार बजे उठकर नहाने-धोने, तैयार होने चौकीदार नहीं आया तो मुझे आशंका हुई कि कहीं वह बीमार तो नहीं हो गया। विगत कई वर्षों से इस अतिथिगृह में मैं रुक रही थी। यहाँ के कर्मचारियों से पारिवारिक सौहार्दभाव सा मन में पनप आया था। सुबह मैंने व्यवस्थापक से पूछा तो उन्होंने बताया कि बहादुर चौकीदार आज सेवानिवृत्त हो गये। उन्होंने यह भी बताया कि बहादुर बहुत प्रसन्न थे कि अपने देश में नेपाल जाकर परिवार के साथ रहेंगे और यहां से मिली सेवानिवृत्ति की धनराशि वहां जाने पर लगभग दुगनी हो जायेगी, क्योंकि नेपाल की मुद्रा भारत से सस्ती है। मुझे याद आये वह वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी जो भारत सरकार के उच्च पद से सेवानिवृत्त हो रहे थे। उन्होंने अपने मित्र से बताया था कि मैं आज बाथरूम में जाकर खूब रोया था। मित्र ने कारण पूछा तो उन्होंने बताया था - 'कल से जो शून्य जीवन में आने वाला है उससे मैं भयभीत हूँ। रात दिन परिवार की किचकिच में रहना, न गाड़ी, न बंगला, न चपरासी, न ड्राइवर न माली। इतने दिनों से इतनी सुविधाओं का आदी हो गया हूँ कि इन सबके बिना जीना पड़ेगा सोचकर भी डर लग रहा है। अब मैं ज्यादा दिन नहीं जी पाऊँगा।' मैं दो वरिष्ठ नागरिकों में समानता और असहायता के लक्षण ढूँढने की कोशिश करने लगी थी। **-डॉ. विद्याविन्दु सिंह**

सैमसंग इण्डिया के कस्टमर सर्विस कैम्पेन ने तोड़े रिकॉर्ड

उदयपुर। सैमसंग इण्डिया का लोकप्रिय टेलीविज़न एवं डिजिटल कैम्पेन 'वी विल टेक केयर ऑफ यू, वेयरऐवर यू आर' ने यूट्यूब पर 100 मिलियन से ज़्यादा व्यूज़ का रिकॉर्ड आंकड़ा पार कर लिया है। गौरतलब है कि सैमसंग द्वारा पेश किया गया यह विशेष अभियान दूरदराज के इलाकों में मौजूद कन्ज़्यूमर्स को उत्कृष्ट कस्टमर सर्विस के फायदे पहुंचा रहा है।

सैमसंग इण्डिया के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर रनजीवजीत सिंह ने कहा कि 'वी विल टेक केयर ऑफ यू, वेयरऐवर यू आर' कैम्पेन दुनिया भर में कन्ज़्यूमर एवं स्मार्टफोन कैटेगरी में सबसे ज़्यादा देखा जाने वाला एडवरटाइज़िंग वीडियो तथा भारत में सभी कैटेगरीज़ में यूट्यूब पर सबसे ज़्यादा देखा जाने वाला एडवरटाइज़िंग वीडियो बन चुका है। फिल्म भारत में यूट्यूब पर 100 मिलियन व्यूज़ का आंकड़ा पार करने वाले सबसे तेज़ वीडियोज़ में से एक है तथा अब तक विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर इसके 224,000 से ज़्यादा कन्ज़्यूमर एंगेजमेन्ट्स हैं।इस नई कन्ज़्यूमर सर्विस पहल के माध्यम से हम भारत के हर तालुका में सैमसंग कन्ज़्यूमर्स के घर तक विश्वस्तरीय सेवाएं पहुंचाने में कामयाब रहे हैं। फिल्म की अवधारणा चैल इण्डिया द्वारा पेश की गई है और यह प्रिन्ट एवं डिजिटल माध्यम से 50 से ज़्यादा टेलीविज़न चैनलों पर चल रही है।

चैल इण्डिया के चीफ क्रिएटिव ऑफिसर सागर महाबलेश्वरकर ने कहा कि मोबाइल एवं कन्ज़्यूमर ड्यूरेबल्स कैटेगरी में भारत के सबसे भरोसेमंद ब्राण्ड सैमसंग ने शहरी एवं ग्रामीण भारत के कन्ज़्यूमर्स को गुणवत्तापूर्ण सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए गत अक्टूबर माह में 535 सर्विस वैन्स लॉन्च की।

सैमसंग की ये सर्विस वैन्स मल्टी-स्किल्ड इंजीनियरों, मुख्य अवयवों, पावर जनरेटर सैट और प्रमुख जिग्स/फिक्सचर्स से युक्त हैं जो त्वरित प्रतिक्रिया के साथ मौके पर ही कन्ज़्यूमर्स की समस्याओं का समाधान करती हैं। अपने लॉन्च के बाद से सैमसंग सर्विस वैन्स देश भर में एक मिलियन किलोमीटर से ज़्यादा दूरी तय कर चुकी हैं।

सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र उदयपुर में 23 फरवरी को डॉ. महेन्द्र भानावत ने कठपुतली कला का इतिहास तथा कथा-कथन विषय पर दो व्याख्यान दिये। व्याख्यानोपरान्त पश्चिम बंगाल के प्रतिभागियों ने डॉ. भानावत को दो पुतलियां भेंट की।

असली मीरां पोथियों में नहीं, जन-धारणाओं में मिलेगी : डॉ. भानावत

महाराणा प्रताप स्मारक समिति, उदयपुर द्वारा 28 फरवरी को आयोजित भक्तिमती मीरांबाई की स्मृति में राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि अब तक मीरां निज-धारणाओं का ही प्रतिलेखन रही इसलिए मीरां को हमने उलझन भरी ही अधिक बना दिया है और यदि ऐसा ही होता रहा तो अगले सौ वर्षों तक भी हम वास्तविक मीरां को नहीं पकड़ पायेंगे। आवश्यकता है, लोकपरम्परा में प्रतिष्ठित मीरां विषयक जो धारणाएं, श्रुतियां और कथा-कथन, मिथक हैं उनकी तलाश करें। उन स्थानों का भ्रमण करें जहां चित्तौड़ से निकलकर मीरां भ्रमण करती रहीं।

फोटो : इकबाल सागर

उन्होंने कहा कि यदि पद ही हमारे साक्ष्य हैं तो वे भी कई प्रांतों में, कई वाणियों, बोलियों, भाषाओं में लिखे मिलते हैं जो मीरां रचित नहीं कहे जा सकते। हजारों की संख्या में, जनजातियों तक में मीरां की छाप के पद आज भी लिखे जा रहे हैं, गाये-बजाये जा रहे हैं, बांचे जा रहे हैं। अनाम लिखकर मीरां की छाप से लिखने की जो परम्परा रही, उसे भी हमको ठीक से समझना होगा। ऐसे अनेक पद चन्द्रसखी और अन्यों के नाम से भी लिखे गये। भजन-मंडलियों में जो कुछ गाया जा रहा है, उसका अध्ययन भी बड़ा रुचिकर और शोध के कई गवाक्ष खोलता है। आश्चर्य तो यह भी है कि जिन्होंने मीरांबाई पर ग्रंथ और शोधपरक लिखा वे कुड़की, मेड़ता और चित्तौड़ तक को नहीं देख पाये। अत: आवश्यकता अधिक इस बात की है कि मीरां को ढूंढते समय हम मीरांमय होकर उसे ढूंढें। उन भक्तिस्थलों, मंदिरों को देखें जहां भक्ति का असली रंग फैला हुआ है। कैसे कोई भक्ति में पूर्ण समर्पित होकर अपना सर्वस्व विगलित कर विदेह हो जाता है। भक्ति-रंग में सर्वस्व समर्पित हो स्व को तिरोहित कर देता है। इस दृष्टि से मीरां के पद मीरां को सही रूप से प्रस्तुत नहीं कर सकते कारण कि वे मीरां के लिखे नहीं होकर लिखने वाले की निजी मनसा-भावना के फलित हैं इसलिए मीरां 'जितने मन उतने वचन-कथन' की हो गई है।

संगोष्ठी का विषय था -मीरां का जीवन और समाज : धारणाएं और विचार। डॉ. भानावत ने कहा कि चित्तौड़ की एक गोष्ठी में तो विद्वान यही विचार करते रहे कि मीरा लिखा जाय या मीरां। एक अन्यत्र गोष्ठी में विद्वान यह मांग करते रहे कि मीरां के प्रामाणिक पदों का अच्छा-सा संकलन निकालना चाहिए। ये वे विद्वान थे जिन्होंने अपने रहते महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में मीरां को पढ़ाया।

संगोष्ठी सत्र के पूर्व नई दिल्ली के डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल ने मुख्य वक्ता के रूप में कहा कि भक्ति आंदोलन केवल हिंदी का न होकर पूरे भारत का रहा। इसकी विशेषता यह रही कि संतों ने नये मनुष्यों की कल्पना की।

हर बड़ा भक्त किसी न किसी का शिष्य रहा और गुरु भी बना किंतु मीरां का न कोई गुरु रहा न उसने कोई शिष्य बनाया और न किसी सम्प्रदाय की ही स्थापना की। भक्तिकाल को मध्यकाल मानने की बजाय आरंभिक आधुनिक काल मानना उचित होगा। हमारी यह विडम्बना ही रही कि हम सबकुछ अंग्रेजों की देन मानते हैं। हमने कभी कोई समस्या तक पैदा नहीं की, समाधान करना तो बहुत दूर रहा।

विशिष्ट अतिथि के रूप में माधव हाड़ा ने कहा कि मीरां का कोई एक ऐंगल नहीं रहा। वह किसी रूढ़ि-रूपक में भी नहीं आती। उसके पदों का निष्कर्ष गलत अर्थ दे देगा। मीरां अद्‌भुत और असाधारण है। अपने ढंग की अलग और खास। उसकी कविता हम सबकी, सबके सुख-दुख की कविता है। सच तो यह है कि मीरां को समझने के लिए हमारे पास कोई आधारभूत सामग्री ही नहीं है।

मुख्य अतिथि सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जे.पी. शर्मा थे। संगोष्ठी निर्देशिका प्रो. विजयलक्ष्मी चौहान ने कहा कि मीरांबाई पर जितना ज्यादा मंथन करेंगे उतने ही नये तथ्य मिलेंगे।

मीरां के संबंध में ज्ञात कम, प्रचारित ज्यादा

मीरां मध्यकाल की सर्वाधिक लोकप्रिय संत-भक्त कवयित्री है। अस्मिता केंद्रित विमर्श के कारण उसका महत्व और प्रासंगिकता इधर बढ़ गई। कहा जाता है कि मीरां के संबंध में ज्ञात कम, प्रचारित ज्यादा है। मीरां के जीवन और समाज के संबंध में कई मिथ, जनश्रुतियां और धारणाएं लोक और धर्माख्यानों में प्रचलित हैं। उसकी कविता का भी कोई एकरूप और प्रामाणिक पाठ उपलब्ध नहीं है। मीरां की कविता समावेशी और उदार थी इसलिए सांचों-खांचों में काट-बांट कर अपनी-अपनी मीरांएँ गढ़ने का सिलसिला बहुत पहले शुरू हो गया। धार्मिक आख्यानकार केवल उसकी भक्ति पर ठहर गए जबकि उपनिवेशकालीन इतिहासकारों ने उसके जीवन को अपने हिसाब से प्रेम, रोमांस और रहस्य का आख्यान बना दिया। वामपंथियों ने केवल उसकी सत्ता से नाराजगी और विद्रोह को देखा तो स्त्री-विमर्शकारों ने अपने को उसके साहस और स्वेच्छाचार तक सीमित कर लिया। इस उठापटक में मीरां का वह स्त्री-अनुभव और संघर्ष अनदेखा रह गया जो उसकी कविता में बहुत मुखर है और जिसके संकेत उससे संबंधित आख्यानों, लोक-स्मृतियों और इतिहास में भी मौजूद हैं। मीरां इतिहास, आख्यान लोक और कविता में से किसी एक में नहीं है। वह इन सभी में है। इसलिए उसकी खोज और पहचान इन सभी में होनी चाहिये।

मीरां का स्वर हाशिए का नहीं, उसके अपने जीवंत और गतिशील समाज का सामान्य स्वर है। यह वह समाज है जो मीरां को होने के लिए जगह देता है। उसको सदियों तक अपनी स्मृति और सिर-माथे पर भी रखता है। इस समाज की पहचान औपनिवेशिक, वामपंथी और अस्मिता विमर्शी सांचों-खांचों में नहीं हो सकती। इसके लिए उसके दैनंदिन जीवन-व्यवहारों और देश-भाषा-स्त्रोतों की खोज-पड़ताल भी अपेक्षित है।

राजन को राष्ट्रबन्धु सम्मान

भारतीय बालकल्याण संस्थान, कानपुर में 26 फरवरी को आयोजित सम्मान समारोह में आकोला के सुप्रसिद्ध साहित्यकार राजकुमार जैन 'राजन' को 'डॉ. राष्ट्रबन्धु स्मृति सम्मान' प्रदान किया गया। समारोह के अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय, मुख्य अतिथि भूधरनारायण मिश्र एवं विशिष्ठ अतिथि पं. रामकृष्ण तेलंग, रामनाथ महेंद्र तथा कमलकिशोर थे। अपने उद्‌बोधन में राजन ने कहा कि आज का बालक बीस-तीस वर्ष पुराना बालक नहीं रह गया है। वह आज आभासी दुनिया की चकाचौंध में खोया हुआ है। वास्तविक दुनिया से दूर होने के कारण एकाकी, चिड़चिड़ा व संस्कारहीन होता जा रहा है।

चहुँ और साइबर दुनिया का कीचड़ फैला हुआ है। ऐसे में बालसाहित्यकारों का दायित्व है कि वे बच्चों को कीचड़ में से मोती चुनना सिखायें। बालसाहित्य ही संस्कारपूर्ण साहित्य है जो बच्चों को जीवन निर्माण की ओर प्रेरित करता है। इस साहित्य की सच्ची सेवा तभी होगी जब हम उत्कृष्ट कार्य करने वाली पत्र-पत्रिकाओं, संस्थाओं तथा साहित्यसेवियो को तन, मन, धन से सहयोग करें और अधिकाधिक बालकों तक यह साहित्य पहुंचाने में सहभागी बनें।

-कीर्ति श्रीवास्तव

टाईड प्लस लांच

उदयपुर। भारत के प्रमुख फैब्रिक केयर ब्राण्ड पीएण्डजी ने नये और बेहतर टाईड प्लस को पेश किया है। टेलीविजन हस्ती दृष्टि धामी, मौनी रॉय, नम्रता शिरोडकर और जसमिन भसिन द्वारा टाईड प्लस एवं टाईड के नवीन अभियान 'कॉलर अप विद टाईड' के प्रचार-प्रसार हेतु देशभर के बिग बाजार और हाइपरसिटी स्टोर्स का भ्रमण किया गया। उन्होंने लोगों को टाईड के नवीन अभियान 'हैशटैग कॉलर अप विद टाईड' के बारे में बताया कि कैसे नये सर्वश्रेष्ठ टाईड के साथ आप अपनी कॉलर को गंदा होने से बचाते हुए साफ कपड़ों का आनंद ले सकते हैं।

नया टाईड 49 रूपये में 500 ग्राम और 96 रूपये में 1 किलो के पैक में उपलब्ध है। दृष्टि धामी ने टाईड प्लस को अहमदाबाद और चंडीगढ़ में पेश किया। मौनी रॉय ने कोलकाता, जासमिन भसिन ने भोपाल में टाईड प्लस को पेश किया।

पीएण्डजी इंडिया फैब्रिक केयर की ब्राण्ड मैनेजर प्रियंका गोयल ने कहा टाईड हमेशा से कपड़े धोने के काम में आसानी पैदा करने के लिये बेहतर सफेदी के साथ खड़ा होता आया है। इसी भावना को चरितार्थ करते हुए इस नवीन उत्पाद का लक्ष्य बेहतर उत्पाद, बेहतर सफेदी द्वारा उपभोक्ताओं को खुश रखना है। टाईड प्लस का नवीन संदेश 'अब कॉलर मत लटकाओ, शानदार सफेदी पाओ, कॉलर हमेशा उठाओ' सबसे आकर्षक संदेश है।

ये दिन तो गले मिलने के लिए

मालूम नहीं क्या बात हुई
क्या जी में समाई होली में।
सूरत भी तो अपनी जालिम ने
हमको न दिखाई होली में।
ये दिन तो गले मिलने के लिए
मिलते हैं इसी दिन लोग गले।
उस शोख ने गैरों से मिलकर
क्या जान जलाई होली में।
जब याद किसी की आती है
या गम की आग जलाती है।
देता है मेरा दिल रो-रोकर
होली को दुहाई होली में।।

-इकबाल सागर

सांवरियाजी मंदिर में धराई हर्बल गुलाल

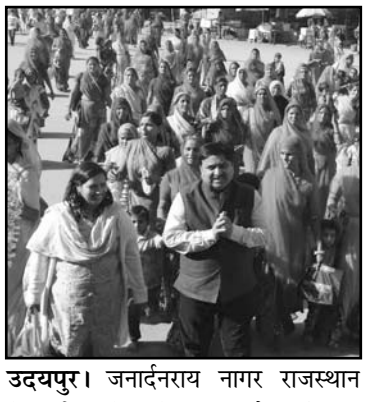

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संघटक जनशिक्षण एवं कार्यक्रम निदेशालय के अन्तर्गत संचालित श्रेय भारती सामुदायिक केन्द्र साकरोदा की स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा बनाई गई हर्बल गुलाल कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत, निदेशक प्रो. मंजू मांडोत एवं महिलाओं ने ढोल नागाड़ों के साथ मंडफिया स्थित सांवरियाजी मंदिर में धराई गई। इस दौरान प्रो. सारंगदेवोत का मंदिर के मुखिया द्वारा समाधान कराया गया। इस अवसर पर हीरालाल चौबीसा, बालकृष्ण शुक्ला, दिनेश तिवारी, कृष्णकांत नाहर सहित कई महिलाएं उपस्थित थीं।

कैन्सर की गांठ का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल में चिकित्सकों ने एक मरीज की पीठ से दो किलो वजनी कैंसर की गांठ निकाली है।

पीएमसीएच के सर्जरी विभाग के हैड डॉ. के.सी व्यास ने बताया कि पालाखेड़ी, चित्तौड़गढ़ निवासी 67 वर्षीय धन्नालाल पिछले छह महिनों से पीठ पर गांठ के चलते परेशान था। गत दिनों परिजन धन्नालाल को पीएमसीएच में लेकर आए। धन्नालाल के पीठ के बीचोंबीच खरबूजे जैसी गांठ देखकर डॉक्टर भी अचंभित हो गए। चिकित्सकों ने उसकी गांठ की जांच की तो वह कैंसर की गांठ निकली।

इस पर डॉ के. सी व्यास के साथ डॉ. गौरव वधावन, डॉ. प्रकाश औदित्य, डॉ. विजय, अजय चौधरी, सुरेश की टीम ने दो चरणों में ऑपरेशन द्वारा कैन्सर की गांठ को जड़ से निकाल दिया। धन्नालाल अभी पूरी तरह से स्वस्थ्य हैं। गौरतलब है कि पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल में धन्नालाल का ऑपरेशन निशुल्क किया गया।

235 रोगियों का परीक्षण

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संघटक जनभारती सामुदायिक केन्द्र कानपुर एवं जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल के संयुक्त तत्वावधान में निशुल्क परामर्श, जांच एवं दवा वितरण शिविर आयोजित किया गया।

उद्‌घाटन कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत, प्राचार्य डॉ. मंजू मांडोत, डॉ. विष्णु माथुर, डॉ. निरज निराला, डॉ. विष्णु लौहार ने किया। मुख्य व्यवस्थापक हीरालाल चौबीसा ने बताया कि शिविर में कानपुर, भोइयों की पंचोली, मटून, खरबड़िया, उमरड़ा के 235 से लोगों की जांच की गई। शिविर के दौरान जीबीएच हॉस्पीटल ने निशुल्क जेनेरिक दवा वितरीत की।

पड़ कला के पर्याय.....

(पृष्ठ दो का शेष)

3 जुलाई 2013 को भीलवाड़ा में श्रीलालजी से उनके घर मिलकर में बेहद उल्लसित हुआ। पांच मार्च 1931 को जन्मे श्रीलालजी पर उम्र का अभी कोई बेढब चढ़ाव नहीं है। वही सरलता, सहजता, मृदुल हंसी, धोती, जब्बा और पुट्ठे वाली काली टोपी तथा पतली डंडी वाला चश्मा जो तब भी था जब मेरी उनसे पहली बार भेंट हुई थी। यहां बड़े लम्बे समय तक हम श्रीलालजी से जुड़े अतीत के व्यतीत और वर्तमान के भविष्य को लेकर नई-पुरानी बातों को खंगालते रहे। उन्होंने बताया कि 13वीं शताब्दी के बाद राजपूत तथा मुगल शैली के मिश्रण से उनके पूर्वजों ने जो कला विकसित की वही मेवाड़ की लोक चितरावण शैली है जो सर्वाधिक पड़ कला के रूप में जानी गई। प्रारंभ में पड़-कला का प्रदर्शन धार्मिक भावना की प्रधानता को लेकर था। मनोरंजन तो हो ही जाता। इसे आत्मानुरंजन कहना अधिक ठीक होगा। धीरे-धीरे इसे व्यवसाय के स्तर तक लाया गया। यह कार्य देवीलालजी सामर और आप लोगों के कहने से ही प्रारंभ हुआ। नहीं तो शायद इसका बचना ही मुश्किल हो जाता। जब यह कला चल निकली है तो मैंने अलग-अलग दृश्यों को खंड-खंड रूप में अलग-अलग कपड़े पर बनाना शुरू किया। इससे मुझे अच्छा आर्थिक लाभ मिला और पड़-कला का विस्तार और प्रसार भी हुआ।

मैं देख रहा हूं, एक सूखे तालाब से उठे श्रीलालजी अब एक विशाल समन्दर की तरह अपनी इस कला पर गंभीर रूप से गर्वित हैं। वे पूरे देश में, कई राज्यों द्वारा, बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों और कई बार भारत सरकार द्वारा सम्मानित हो चुके हैं। पद्मश्री और शिल्पगुरु कला सम्मान के वे श्रेष्ठीवर हैं। उनकी देवनारायण कलाकृति पर डाक-तार विभाग ने रंगीन टिकिट भी निकाला। इस्लामाबाद के सार्क सम्मेलन तथा रूस, स्वीडन में हुए भारत महोत्सव की शोभा वे बढ़ा चुके हैं। उन्होंने जापान, आस्ट्रेलिया, सिंगापुर, न्यूयार्क, स्वीडन, रूस, जर्मनी, पाकिस्तान जैसे कई देशों में अपनी पड़-कला की प्रदर्शनियां भी लगाईं। कई जगह उनके सान्निध्य में कार्यशालाएं आयोजित हुईं और कई जगह के ख्यात संग्रहालयों में उनकी कृतियों का जुड़ाव उनके यशवर्धन का कीर्तिस्तंभ बना।

भीलवाड़ा के सांगानेरी गेट के उनके निवास को जोशी कलाकुंज के रूप में मैंने उन्हें पहले भी देखा है और अब तो वह बस्ती व्यस्ततम बाजार का रूप ले चुकी है। श्रीलालजी ने चित्रशाला के रूप में अपने निवास को कलामय वीथिका का रूप दे रखा है। मुझे वे ऊपर-नीचे सब तरफ घुमाते हैं। कोई दीवाल-आंगन उनके चित्रों से खाली नहीं है। उनके दोनों पुत्र कल्याण एवं गोपाल उन्हीं के दिशा निर्देश में उनकी कलम को कमनीय किए हुए हैं। कल्याण से तो मेरी भेंट कई जगह हुई है खासतौर से कलकत्ता, भोपाल के कला समारोहों में। सर्वत्र श्रीलालजी के ही नक्शे कदम पर कल्याण भी शोभित प्रतिष्ठित हो रहा है।

मैं श्रीलालजी से पूछता हूं, जीवन के इस उत्तरार्द्ध में अब कोई तमन्ना तो शेष नहीं रही? इस पर वे जोर की हंसी लाते हैं और मेरी हथेली को अपनी मुट्ठी में दबाते हुए कहते हैं - ''था ही क्या मेरे पास। जितना हो गया हूं उतना तो सपना ही नहीं देखा था कभी! लाख धन्य है ऊपरवाले को और अपने मिलने वाले स्वजन स्नेही कृपालुओं को।''

मैं भारी मन से उनसे विदा लेता हूं। वे भी भर आये हैं जैसे उनकी गीली आंखें कह रही हैं, 'ऐसे मिलते रहेंगे कभी-कभी, जैसे मिलते आये हैं कभी-कभी।'

छह मिलियन से अधिक का डेंटल चेकअप

उदयपुर। कोलगेट एवं इंडियन डेंटल एसोसिएशन (आइडीए) ने अपने 13वें वार्षिक ओरल हेल्थ मंथ (ओएचएम) प्रोग्राम का सफलतापूर्वक संचालन किया। यह प्रोग्राम कीप इंडिया स्माइलिंग का एक हिस्सा है। कोलगेट-पॉमोलिव (इंडिया) लि. के प्रबंध निदेशक इस्साम बचलानी ने कहा कि ओरल हेल्थ मंथ प्रोग्राम में स्कूली बच्चों को दांत से संबंधित शिक्षा देना, लोगों को मुंह की सफाई के महत्व के बारे में शिक्षित करना और मुंह की देखभाल के लिए स्वास्थ्यवर्धक आदतों को बढ़ावा देना, स्कूलों, मॉल्स, आर्मी कैंटीन्स, जैसे विभिन्न स्थानों एवं मोबाइल डेंटल वैन्स में सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए निशूल्क दंत शिविर लगाना शामिल है। श्री बचलानी ने कहा कि इस बार 1100 से अधिक शहरों में स्कूलों, मॉल्स एवं मोबाइल वैंस द्वारा 6 मिलियन से अधिक भारतीयों को डेंटल चेक-अप्स मुहैया किये हैं। इसमें 34,000 आइडीए दंत चिकित्सकों ने हिस्सा लिया। इंडियन डेंटल एसोसिएशन के महासचिव डॉ. अशोक धोबले ने बताया कि आइडीए एवं कोलगेट द्वारा पिछले तेरह सालों से हर साल दो महीने लंबा ओरल हेल्थ मंथ प्रोग्राम चलाया जा रहा है ताकि सभी आयु वर्ग के लोगों में दंत संबंधी जागरुकता को बढ़ावा दिया जा सके।

डेल्हीवुड का आयोजन

उदयपुर। डेल्हीवुड-2017 का आयोजन ग्रेटर नोएडा में एक मार्च से किया जाएगा। इसमें तीस से अधिक देशों के 450 से भी अधिक प्रदर्शक, 30,000 वर्गमीटर के क्षेत्र में फर्नीचर उत्पादन तथा काष्ठ-आधारित निर्माण के लिये अपनी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों, मशीनों, औजारों, फिटिंग्सन, एक्सेसरीज, कच्चेर माल तथा उत्पादों का प्रदर्शन करेंगे। पीडीए ट्रेड फेयर्स द्वारा आयोजित और यूमॅबॉइस 14 यूरोपीय देशों की वुडवर्किंग मशीनरी निर्माताओं की एक फैडरेशन द्वारा समर्थित डेल्हीवुड-2017 में कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, इटली, मलेशिया, रशिया, ताइवान, टर्की तथा अमरीका से भाग ले रही पॉविलियन पर इन देशों की घरेलू इनोवेशन (नवोदित उत्पााद) तथा उत्पाद देखने को मिलेंगे। क्षमता को वाणिज्य में बदलने हेतु मंच प्रदान करने वाला डेल्हीवुड-2017, फर्नीचर तथा काष्ठ -आधारित उत्पादन प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में आधुनिक ऑटोमेटिड सॉल्यूशन प्रदर्शित करेगा और भारतीय काष्ठ-आधारित फर्नीचर तथा उत्पाद बाजार में वर्ष 2020 तक अनुमानित 35 अरब अमरीकी डॉलर के अवसर खोलेगा।

उदयपुर में जीएसटी संचालन परिषद की बैठक में कई अहम मुद्दों पर चर्चा

उदयपुर। वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) की संचालन परिषद की 10वीं राष्ट्रीय बैठक गत दिनों उदयपुर के होटल रेडिसन ब्लू में केन्द्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली की अध्यक्षता में हुई। बैठक में विभिन्न राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों के वित्तमंत्रियों सहित कई आला प्रशासनिक अधिकारियों की उपस्थिति में जीएसटी से संबंधित कानूनी मसौदे पर गहन चर्चा की गई। बैठक में परिषद के

सामने कई मुद्दे रखे गए जिनमें से 'कंपंसेशन लॉ' के अंतिम ड्राफ्ट को सहमति प्रदान की गई। बाकी मामलों में भी स्पष्टीकरण के स्तर तक चर्चा हुई। अब अंतिम रूप से चयनित तथा कानूनी रूप से परीक्षित ड्राफ्ट के दिल्ली में 4 व 5 मार्च को होने वाली बैठक में पारित किए जाने की उम्मीद है।

इसके बाद केबिनेट की मंजूरी से इन्हें 9 मार्च से होने वाले ससंद के बजट सत्र के द्वितीय भाग में अनुमति के लिए रखा जाएगा। बैठक में जीएसटी, सीजीएसटी और आईजीएसटी मसौदे के हर पहलू पर बारीकी से चर्चा की गई। जीएसटी काउंसिल ने अपनी नवीं बैठक में जिन 57 आइटम्स पर बदलाव का सुझाव दिया था, उनके साथ ही सात अन्य आइटम्स पर भी चर्चा के बाद आम सहमति बना ली गई।

बैठक के बाद आयोजित प्रेसवार्ता में वित्तमंत्री अरुण जेटली ने कहा कि यह पहली बैठक है जो दिल्ली से बाहर हुई है। इसके लिए राजस्थान सरकार ने बहुत अच्छी व्यवस्था की है। पिछली बैठक में हमने तय किया था कि पहली जुलाई से देश में जीएसटी लागू किया जाए व काफी विषय ऐसे थे जिसमें चर्चा की अवावश्यकता थी। कई पेचीदा मामलों को सुलझा लिए गए। यह आवश्यक है कि बजट सत्र के दूसरे भाग में जो जीएसटी के संविधान संशोधन के तहत संबंधित कानून बनने है उनका मसौदा अंतिम रूप से पूरा हो जाए। वैसे वे जो भी कानून हैं तथा उनके आधारभूत प्रावधान पर लगभग सहमति बन चुकी है। सुझावों के कानूनी परीक्षण कर उन्हें इस बैठक में फिर से अंतिम रूप से प्रस्तुत किया गया। जेटली ने बताया कि काउंसिल की एक लीगल कमेटी भी है जिसमें केंद्र व राज्यों के अधिकारी शामिल हैं। उदयपुर में कानूनी रूप से परीक्षित ड्राफ्ट काउंसिल के सामने आए। संवैधानिक संशोधन प्रावधान के अनुसार जो कानून काउंसिल पास कर देगी, वही कानून केंद्रीय संसद को पारित करना होगा, और जो एसजीएसटी का कानून है वह राज्यों की विधान सभाओं को पारित करना पड़ेगा।

जेटली ने बताया कि ड्राफ्टिंग करते वक्त मसौदे में कई परिवर्तन हुए थे। मसलन जीएसटी का कंपंसेशन कानून है कि अगर किसी राज्य को घाटा होता है, तो पहले पांच साल के लिए उस घाटे को पूरा किया जाएगा, ये सभी सिद्धांत पहले ही स्वीकार किये जा चूके हैं।

इसका कानूनी रूप से परीक्षित ड्राफ्ट काउंसिल के सामने आया व जीएसटी काउंसिल ने इस पहले कानून को मंजूर कर दिया। वह कानून अब काउंसिल के सामने दोबारा नहीं आएगा, उसको केबिनेट के सामने ले जाया जाएगा। केबिनेट उसको सहमति देगी तथा बजट सत्र के दूसरे हिस्से में उसमें पारित करने का प्रयास किया जाएगा।

कानूनी रूप से ड्राफ्टिंग करते वक्त जो सीजीएसटी, एसजीएसटी व आईजीएसटी कानून, उसमें कई पेचीदा मामले सामने आए थे और यह आवश्यकता महसूस की गई कि वे सभी मामले काउंसिल के सामने जाएं, काउंसिल का उसमें विशेष निर्देश ले लिया जाए, केंद्र व राज्यों में जो अपीलीय प्राधिकरण होंगे, उनमें उनके घटक, योग्यता व सदस्यों आदि के बारे में शक्तियों के वितरण के संबंध में, इसके अलावा परिवर्तन के चरण में जो छूटें देनी हैं, मसलन यदि औद्योगिक क्षेत्रों को फाइल लगाने आदि में समय लगता है तो ऐसे मामलों में ज्यादा समय देना, इस प्रकार की छूटें, वर्क्स कॉन्ट्रेक्ट के संबंध में जहां सेवा क्षेत्र भी हैं और वेट भी लगता है, या फिर वेट व सर्विस ट्रेक्स का मिश्रित क्षेत्र है तो वो कौनसी श्रेणी में शामिल किया जाएगा, कंपोजीशन की सीमाएं क्या होंगी, कृषि की परिभाषा को लेकर भी कुछ मामले थे, इन मामलों पर उन कानूनों की ड्राफ्टिंग आदि के प्रश्न लीगल वेटेज के समय कमेटी के सामने आए थे। लीगल कमेटी ने काउंसिल से उन सब मसलों पर सुझाव ले लिए हैं और एक मत से अपना विचार दे दिया है।

उन्होंने कहा कि जो एसजीएसटी कानून होगा वो राज्यों की विधान सभाओं में जाएगा। उस पर भी 4 व 5 मार्च की बैठक में चर्चा की जाएगी। सीजीएसटी व एसजीएसटी कानून लगभग एक सामान है। अंतर इतना है कि एक केंद्र के संबंध में है तो दूसरा राज्य के संबंध में। आईजीएसटी कानून का मसौदा थोड़ा सा अलग है। उसके सभी मामलों को भी सुलझा लिया गया है। 4 व 5 मार्च को बाकी ड्राफ्ट भी अप्रूव हो जाते हैं तो फिर संसद के सत्र में उन्हें पारित करने की स्थिति में होंगे। इसके बाद एक बड़ी बात यह रहेगी कि कौनसी वस्तु किस स्लैब में आती है, उसका फार्मूला भी बुनियादी तौर पर तय हो चुका है। जो स्लैब हमने तय किए थे, हर आइटम को उसके अनुसार ही तय किया जाएगा। चार-पांच मार्च की मीटिंग के बाद हमारे अफसर हर आइटम को उसके स्लैब के अनुसार वर्गीकृत करेंगे। उसके बाद हमें एक बड़ी मीटिंग की जरूरत होगी। हर स्लैब के अनुसार आइटम्स को अप्रूवल की आवश्यकता होगी।

सीएजी के पास पर्याप्त शक्तियां

जीएसटी में सीएजी की शक्तियों को लेकर उलझन भरे सवाल के जवाब में श्री जेतली ने कहा कि सीएजी एंम्पावर्ड है। सीएजी कानून के तहत किसी भी सूचना को ले सकती है। वह सरकार से पब्लिक फाइनेंस से जुड़ी सूचना मांग सकता है। टेक्सेशन कानून के तहत इसे अलग से शक्तियां देने की आवश्यकता नहीं है। यह सुझाव भी इस बैठक में आया था मगर सदस्यों ने कहा कि जब पहले से ही सीएजी के पास शक्तियां हैं तो अलग से उस पर चर्चा की जरूरत नहीं है।

आज एक अनुमानकर्ता को वेट का अनुमान करवाना पड़ता है। एक्साइज व सर्विस टेक्स का करवाना पड़ता है, कई राज्यों में प्रवेश कर आदि का करवाना पड़ता है, अब इन सबके स्थान पर सिर्फ एक ही असेसमेंट होगा तो तो स्वाभाविक है कि फायदा ही होगा। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं है कि जीएसटी से छोटे उद्यामियों को कोई नुकसान होगा। पांच आदमियों से अससेमेंट करवाने से अच्छा है कि एक से ही करवाएं। उन्होंने कहा कि जीएसटी में व्यवस्था ऐसी है कि इसके साफ्टवेयर सिस्टम में कुछ भी छिपाना नामुमकिन हो जाएगा।

प्रेसवार्ता में राजस्व सचिव डॉ. हंसमुख अढ़िया, राजपालसिंह शेखावत उद्योगमंत्री राजस्थान, डीएस मलिक अति. डायरेक्टर जनरल वित्त मंत्रालय, नजीब शाह, चेयरमैन कंट्रोल बोर्ड ऑफ एक्साइट एंड कस्टम मौजूद थे।

स्मृति शेष

बरसों जिनके साथ रंगारंग मस्ती करके।
होली खेली, याद आ रहे वे जी भरके।।

प्रो. नंद चतुर्वेदी :
तुरत हंसी, जीवन रचें, तुरत लिखें रस-छंद।
तुरत-फुरत ऊधम करे, चिर जीवो कवि नंद।।

डॉ. प्रकाश आतुर :
हर होली दीपावली, हर महफिल संवाद।
तुम प्रकाश आते हमें, मन भर-भर कर याद।।

डॉ. सुधा गुप्ता :
कहन लागे मुझको मीरा मीरा।
बाल समय हरि पास न आये, तरुणाई के तीरा।।
कविताई सौं ब्याह रचायो, हल्दी लगी न जीरा।
विरह समुद्र उमड़कर आयो, नेकु रह्यो नहिं धीरा।।
पुस्तक पांच प्रकाशित कीन्ही, अद्‌भुत भयो सरीरा।
होरी के दिन आय सुधासौं, मीराजी लिपटानी।।
गुपचुप प्रेम प्रसंग चलायो, यह अनकही कहानी।
माई री मैं तो रह गई छानीमानी।।

ओंकारश्री :
फूंक निकलगी फेर भी, फुंकारे फुंकार।
आगे पीछे श्री नहीं, फिर भी श्री ओंकार।।

जनार्दनराय नागर :
जय जनार्दन बाबा,
पेंट और बुशर्ट तू ही है, तू ही सबके गाबा।
होटल रेस्टोरेंट तू ही है, तू ही उत्तम ढाबा।।
संस्थावां को ग्वालो तू ही, शिक्षा को रखवारो।
कुंज-निकुंज और गलियारो, मेन रोड़ कोठारो।।
सुबै साम जो मिलजुल भाया, ऐसी आरती गावे।
शंकरजी की पहन लंगोटी, भवसागर तिरजावे।।

मंगल सक्सेना :
बहुत दिये उपदेश, थेपड़ी जैसे थप-थप।
गोबर किये गणेश, यार अब मारो गपशप।।

डॉ. पूनम दईया :
फोन मुफत, मोटर मुफत, मुफत मान सम्मान।
गई निकल अकादमी, यह सोने की खान।।

प्रो. घनश्याम 'शलभ' :
बंधु-बंधु कर सबको लुट्यो, कर्‌यो न कोई काम।
जलबो तो जान्यो नहीं, शलभ धरायो नाम।।

डॉ. आलमशाह खान :
हम आलम, हम शाह हैं, हम हैं आलम शाह।
हम उनको माने नहीं, उन्हें न हमरी चाह।।

-'मसखरी' से साभार

कान्यो मान्यो

चरकला-चरकली रो घर

म्हारे घर रा गोखड़ा री भींत माथै नारसिंघी री गारा री मूरत लागी थकी है। नार रे मूंडा में चड़ा-चड़ी घोंसलो वणावणो सरु कीधो। आपणी चोंच में दोई म्ही-म्ही तरकला लावै नै अदब सूं जमावै। कदी तरकला नीचे पड़ जावै या ठीक नी जमै तो दोई सला करै। चरकलो तेज वेइने वने लड़ै। माथा फोड़ करै।

म्हूं छानोमानो देखबू करूं। मन में होचूं कै यांरो जापो सुधर जावै तो घर बैठ्या आपां ने भी पुन्न मिलै। म्हनै वचार आवै कै चरकला री जात कतरी समझू वै। सब हालचाल परखै कै जठै घोंसलो बणावां वठै कई भौ तो नीं। घरधणी रो मन कस्यो है। जापो सुधरणो चावै।

वारै मन मांय सब नाप जोख है। घोंसलो बणावा मांय कतरो समै लागै। दोयां रे अलावा दूजा कोई नी जाण सकै। दूजा पंखेरु नै भनक लाग जावै तो पाछै पड़ जावै। घोंसलो बखेर दै। दुश्मनी मोल लै तो टकटकी लगाय राखै ने जीवणो हराम कर दै।

म्हूं देखर्‌यो हूं चड़ा-चड़ी दोई नार रे मूंडै घुसग्या। छानामाना दोयां रा बोल ठंडा पड़ग्या। लागै कै चीड़ी जापो जण लीधौ है। नारमुखा में वै कई करै दीखै नीं पण बारलौ कोई ओझकौ नीं है इणस्यूं म्हारौ मन राजी है। धीरै-धीरै ऊंडी बोली सुणवानै मिलै। अंडा सूं बालक्या बारै निकलग्या है। कदीक लागै वांरी आंख्यां खुली नी है। चोंचा काची है। सरीर ढबमें नी है। पांखा उगड़ी नी है। मांस रा लौंदा ज्यूं दो जीव सागे-सागै आपणी जिनगाणी सरु करै नै देखतां-देखतां म्हारी नजरां सूं फुर्र वै जावै। म्हूं धनभाग कै हींग लागी न फटकरी, घरै बैठां पुन्न कमायो।

फतहसागर पर 'पॉवर रन' ने रचा इतिहास

उदयपुर। शहर की फतहसागर की पाल को मानो रविवार की खुशनुमा सुबह का ही इंतजार था। हवा के ठंडे झोंकों और पानी में आती-जाती लहरों के बीच पाल पर नारी शक्ति का संदेश देने इकट्ठा हुई 1500 से अधिक महिलाओं व युवतियों ने इतिहास रच दिया। मौका था महिलाओं की ओर से महिलाओं के लिए आयोजित 'चिक्स कनेक्ट पावर रन मैराथन' का। महिलाओं में जोश इतना था कि सुबह 8 बजे ही फतहसागर पाल का एक छोर नारी शक्ति के नारों से गूंज उठा। सफेद कैप में सजी महिलाओं ने 'भारत माता की जय,' 'वंदे मातरम्' सहित अन्य जोशीले नारे लगा समां बांध दिया। यहां कदम से कदम मिले और कारवां बढ़ता गया। ऑन द स्पॉट रजिस्ट्रेशन का दौर चला व उसके बाद चार-चार का समूह दौड़ के लिए तैयार हो गया।

मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय मंत्री तथा कांग्रेस की वरिष्ठ नेत्री डॉ. गिरिजा व्यास ने चिक्स कनेक्ट की फाउंडर हुर्रतुल मलिका ताज, शोभागपुरा सरपंच कविता जोशी, सुधा भंडारी, पूजा भंडारी, बिंदु शर्मा, मोनिका, सोनाली मारू सहित विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी प्रोफेशनल्स व एंटरप्रेन्योर्स की मौजूदगी में 'पावर रन' को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उदयपुर सहित राजस्थान के विभिन्न जिलों व अन्य राज्यों से आईं प्रतिभागी महिलाओं ने जबर्दस्त उत्साह दिखाते हुए दौड़ के पहले पड़ाव की ओर कूच किया। कार्यक्रम के मुख्य सहयोगी इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लि.,के अलावा हेरिटेज गर्ल्स स्कूल, गोल्ड एन ब्लश पॉर्लर, टेक्नो एन जे आर कॉलेज, अरनोल्ड जिम, क्वीन्स कांर्सोट, अरबन कॉपरेटिव बैंक, पी बडी, एक्शन उदयपुर टीम, इनोवेटिंग हॉस्पिटालिटी, फोर्टिस हॉस्पिटल्स रेडिसन उदयपुर, पिंक्स एंड पिचेज, वेस्ट साइड, प्रोप्स गुरु, पुकार ग्रुप , ब्रुबैरी लेनी भट्ट डांस ऐकेडमी एवं एसआईसीपीएल आदि थे।

सेल्फी की मची होड़ :

मैराथन के पहले पड़ाव पर बने सेल्फी बूथ पर प्रतिभागी महिलाओं ने जबर्दस्त उत्साह दिखाया। फतहसागर के बेकग्राउंड तथा वहां रखे प्रोब के साथ विशेष सेल्फी प्वाइंट पर सबने सेल्फी ली जिन्हें फेसबुक पर हैशटेग चिक्स रन पर अपडोल करना था। सबसे यादगार क्षण वह रहा जब चालीस पार की महिलाओं के समूह ने हास्ययोग करते हुए सेल्फी ली।

गो ग्रीन एक्टिविटी :

इस पड़ाव को पार करते ही प्रतिभागी अगले पड़ाव की ओर रवाना हुए जिसका विषय 'गो-ग्रीन' था। यहां पर अपनी उपस्थित दर्ज कराते ही प्रतिभागियों ने वहां रखी बोतलों को आकर्षक ढंग से सजाया। उनमें मनी प्लांट लगाए व बोटल अपने साथ ले गए। कांसेप्ट यह था कि मनी प्लांट की तरह से लड़कियां भी जीवन के हर क्षेत्र में तरक्की करते हुए निर्बाध रूप से आगे बढ़ें।

3.8 किलोमीटर की इस दौड़ का अंतिम पड़ाव दिलचस्प रहा। यहां पर कई टीमों के बीच मुकाबला बहुत करीबी रहा। तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उत्साह बढ़ाते हुए लोगों ने टीमों का स्वागत करते हुए हौसला बढ़ाया। पहले पांच स्थानों पर रही टीमों को पुरस्कार के लिए चुना गया। इसके अलावा जिन टीमों के साथी दौड़ में पीछे रह गए उनमें से भी व्यक्तिगत स्तर पर प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। यहां स्लोगन स्पर्धा भी हुई जिसमें नारी शक्ति, नारी सशक्तीकरण आदि पर प्रतिभागियों ने सुंदर कविताएं, स्लोगन आदि लिखे।

राजीव गांधी उद्यान के बाहर बने विशेष स्टेज पर पुरस्कार वितरण समारोह हुआ जिसमें प्रतिभागियों ने भी धमाकेदार प्रस्तुतियां दीं। इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड के सीनियर मैनेजर सुदीप्तो, हैरिटेज गर्ल्स स्कूल की निदेशक सुधा भंडारी, एसआईसीपीएल की डायरेक्टर अंजु गिरी, टेक्नो एनजेआर कॉलेज की निदेशक श्रीमती मीरा सहित अन्य अतिथियों ने मैराथन की प्रथम पांच विजेताओं को पुरस्कृत किया। इसके अलावा गो ग्रीन की ओर से भी पांच पुरस्कार प्रदान किए गए।

ये रहे विजेता :

व्यक्तिगत स्पर्धा में गुंजल जैन, दिव्या भटनागर, साक्षी अंजना, ललिता सिंघवी, सावित्री कुमावत मैडल व ट्रॉफी दी गई।

पोस्टर प्रतियोगिता की दस विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

समूह में एसएनवीवी व मेवाड़ स्टार ग्रुप, कूपन नंबर 246 व कूपन नंबर 287 टीम विजेता रहीं।

ग्रो ग्रीन में फेंटास्टिक फोर, एवेंजर्स, टीम ममता, फेब फोर को पुरस्कार मिला जिन्होंने बोटल का सबसे अच्छा डेकोरेशन किया।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।